॥ श्रीः ॥

मरु–मंगळ

(संदर्भ-सोध अर
जुग-बोध री
राजस्थानी काव्य)

–शेखावत सुमेरसिंह

प्रकाशक और वितरक :
अलका प्रकाशन,
आनन्द नगर,
सीकर (राजस्थान)

प्रकाशक :
अलका प्रकाशन,
आनन्द नगर,
सीकर (राजस्थान)

पै'लो परकास :
रथपुन्यू, सं० २०३६ वि०

मोल : विसेष प्रति—उपहार अर समालोचना सारू
साधारण प्रति—इक्कीस रिपिया बिक्री रै वास्तै

कवि-रचयिता : शेखावत सुमेर सिंह

मुद्रक :
फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स,
जौहरी बाजार,
जयपुर—३०२००३

प्रकाशकीय आभार

अलका प्रकाशन, सीकर राजस्थान ने वर्षों पहले राजस्थानी ऋतु काव्य 'मेघमाळ' का प्रकाशन किया था। राजस्थान-साहित्य-सगम ने इसके लिए प्रकाशन-सहायता प्रदान की थी। विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम मे 'मेघमाळ' पुस्तक स्वीकृत हुई, शोध-प्रबन्धो की वह बहुचर्चित सामग्री बनी तथा प्रबुद्ध पाठको ने उसको अत्यधिक पसन्द किया। इन सब बातो से कवि और प्रकाशन-प्रतिष्ठान दोनों के उत्साह मे अतिशय अभिवृद्धि हुई है।

अब 'मरु-मगळ' काव्य का शानदार प्रकाशन आपके हाथो मे है। इसको लिखा कवि ने है जब कि प्रकाशन के प्रेरक बहुत से साहित्य-प्रेमी और कवि के अतरग मित्र हैं।

सीकर के प्रबुद्ध मूल निवासियो और यहा के प्रवासियो ने इसके प्रकाशन मे हर प्रकार से हमारी सक्रिय सहायता की है। इसके लिए कवि और प्रकाशन-प्रतिष्ठान दोनो अन्तर्मन से उन सब के प्रति आभारी हैं।

कवि के सहपाठी-सहचर श्रीयुत् रमाकान्त जी खेतान भारत-विख्यात बॉल-बियरिंग-विशेषज्ञ, कृपालु श्रीयुत् शब्द प्रसाद जी रावत, सुविख्यात विधि-विशेषज्ञ तथा साथी श्रीयुत् श्रीचन्द जी जाखड, चिकित्सा-पुरुष-परिचारक का सहयोग सदा अविस्मरणीय रहेगा जिन्होने प्रकाशन के बोझ को आरम्भ मे ही आधा कर दिया।

साथ ही यहाँ उन सब सहृदय सज्जनों की भी एक सूची दी जा रही है जिन्होंने शेष भार को भी शुरू में ही अपने कधो पर उठा लिया। वे हैं —

सर्व श्रीयुत् गोपीराम बालाबक्श-प्रतिष्ठान के उद्योग-व्यवसायी मदनलालजी तथा शिवभगवान जी बियानी, बानूड़ा-सीकर निवासी तथा असम प्रवासी मुरलीधर जी खेतान, गणेशनारायण जी मालपानी, भागचन्दजी जैन, सीकर, मँगनीराम जी मोदी, प्रधान रामेश्वरलाल जी महरिया, विधायक घनश्याम जी तिवाडी एव परशुरामजी मोरदिया, ठाकुर प्रतापसिह जी तथा राजसिह जी सरवडी-सीकर, 'सुपात्तर बीनणी' के हीरो शिरीष कुमार जी, नौरगराय जी रघुनाथगढ-वाले, रामस्वरूप जी कावरा, एडवोकेट मदनलाल जी सोनी, केसरदेव जी मोर,

रूपनारायण जी माथुर, हरखचन्द जी गुप्ता, सांवरमल जी जोगानी, सीताराम जी सिहोटिया तथा ठाकुर फतहसिंह जी, दुर्गाप्रसादजी उपाध्याय, ठाकुर शिवदानसिंहजी, कर्नल हनुमानसिंह जी तथा समुद्रसिंह जी शेखावत, जगदीश प्रसाद जी त्रिपाठी, सांस्कृतिक मण्डल, साहित्य-परिषद, मीनाक्षी सिनेमा, सम्राट टॉकीज, धुरी साप्ताहिक, सरस्वती प्रिण्टिंग प्रेस तथा लोकमंगल मुद्रणालय, विक्रम गैस एजेन्सीज, पवनकुमार जी मोदी, धर्मचन्द जी जैन, निर्मल कुमार जी छाबड़ा, सांवरीमलजी कावरा, ठाकुर गोरधन सिंह जी सिहोट, सत्यनारायण जी पारीक, द्वारकाप्रसादजी गोटेवाले, सोमनाथ जी त्रिहन, कप्तान शान्तिप्रसाद जी, गोविन्दराम जी अग्रवाल, आत्मारामजी पसारी, पुष्करलाल जी सर्राफ, लादूराम जी सर्राफ, भीमसिंह जी नरूका, महाबलवीर सिंहजी दीपपुरा, आरक्षी अधीक्षक लादूसिंह जी तथा सरपंच लक्ष्मण सिंह जी दूजोद, डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद जी त्रिपाठी, राधेश्याम जी शर्मा, मूलचन्द जी बजाज, वैद्य दुर्गेशजी शास्त्री-व्यास, घीसालाल जी बिदावलका, चौथमल जी बियानी, सरवड़ी-सीकर, श्रीनारायण जी महर्षि, नन्दकिशोर जी माथुर, चौथमल जी चौधरी, सागरमलजी सोमानी, प्रभुदयाल जी पहाड़िया, प्रिंसीपल दुर्गालाल जी पारीक, प्रो॰ ओमप्रकाशजी जाजू, शर्मा फोटो स्टूडियो, शेखावाटी मोटर स्टोर्स, ओमप्रकाश जी गाडोदिया, सत्यनारायण जी सोनी, सीताराम जी व्यास, अर्जुनलाल जी झाझूका, सांवरमल जी पारीक, ओमप्रकाश जी माथुर, रतनलाल जी शर्मा, सूरजमल जी छाबड़ा, ठा॰ भूपालसिंह जी, जमनालाल जी सोहनलाल जी जांगिड, कन्हैयालाल जी नौरंगराय जी, दूजोद, केसरदेव जी दीक्षित, महालसिंह जी चौहान, महालसिंह जी जीणवास, माधवप्रसाद जी शर्मा, लालचन्द जी शर्मा, भूधरमल जी सोनी, शार्दूलसिंह जी कविया, हरिसिंह जी फगेड़िया, रामेश्वर प्रसाद जी, रमेशचन्द्र जी खटोड, बनवारीलाल जी दीक्षित, मोहनलाल जी शर्मा, स्कूल दूजोद, श्यामलाल जी बिदावतका, मथमल जी शर्मा, हरिकिशन जी रामप्रताप जी चेजारा, स्टैण्डर्ड डेण्टल क्लीनिक, राजस्थान बुक डिपो, शंकर फोटो स्टूडियो एवं विजय स्टूडियो, हनुमान प्रसाद जी फोटोग्राफर, सवाईसिंह जी धमोरा, केसरसिंह जी सुराणी, फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, जुबली ब्लाक्स एवं मनोज जी त्रिवेदी व्यंग्य-चित्रकार, गुलाबचन्दजी क्लावटिया, राजकुमारजी जैन, रामकृष्णजी शर्मा, ठा॰ गिरवरसिंहजी दूजोद। अन्तरंग अनुराग एवं हार्दिक आभार सहित—साभार,

सौम्य श्री शारदा,
अलका प्रकाशन,
आनन्द नगर, सीकर (राज)

• शेखावत सुमेरसिंह

लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत,
राजस्थान विधान सभा

जयपुर,
दिनांक 30-7-82

सत्यमेव-जयते

सन्देश

श्री सुमेरसिंहजी शेखावत री कलम में सिंघी उतारण री सगती है। भांत-भांत रा रगां सूं राजस्थान रा रंगीला ग्राभा रा चितराम वां 'मेघमाळ' में माडिया। 'मेघमाळ' रा धारवां में सूं मेह बरसायो वी राजस्थानी रा साहित्त नै सरसायो।

श्री सुमेरसिंहजी छन्दां री रचना करो ग्रर ग्रोजूं करता जाय रिया है, उणा में मरुधरा री छवि झळकै ग्रर पळकै। नुंवो मरुधर झांकै, जूनो मरुधर ऊभा दीखै। छंदां री गुंथावट में ग्रोजरै लारै सरसता है। सवदां री बंधेज रो ताणो-वाणो ग्रतरो काठो कै एकाध ग्राखर नै भी फेर-बदळ करवा में पचणो पड़ै।

छद-रचना रै लारै ग्रापरो एक विचारधारा है, विचारां रै लारै एक बलवान चरित्र है, चरित्र रै लारै एक रजथानी परम्परा है। ये सगळा मिल छंदां मायनै पिराण पधराय दिया है। एक में पीडा बोलै तो दूजो सनेसो दे! तीजा में ग्रांजस है तो चौथो नीसासा भरै। राजस्थानी रा टाळवां ग्रर सतोला सबद रूपक नै ग्रौर भी रूपाळो बणाय दीधो है।

एडा छंदा री बरावर रचना चालती रैवै-या म्हारी ग्ररदास है।

—लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत

श्रीगोपाल पुरोहित
राजस्थान पत्रिका (रविवासरीय परिशिष्ट)
जयपुर (राजस्थान) दिनाक २८ अगस्त, १६८२

सम्मति

शेखावत सुमेरसिंह जी राजस्थानी अर हिन्दी दोनुवां रा जाणीता-मानीता कवि हैं। उणां री सिरमौर खासियत आ है कै वै ऐडा थोडा सा लोगां मे सूं एक हैं जिका मरुधरा री न्यारी–निरवाळी ओळखाण रै खातर चिन्तित लागै। राजस्थान री एक सुतत्तर सांस्कृतिक हस्ती है–इण बुनियादी बात रो भान सुमेरजी री नुंवी काव्य कृति 'मरु मगळ' रै हर पद में भळकै अर पळकै। –कवि री साधना इण काव्य मे पूरी तरियां फळीभूत हुई है।

–श्रीगोपाल पुरोहित

गिगनारी पट्ट र चौफेर गूंजता सा लखावै। झरणें री झरण ज्यूं झळझळता कोयल रै इकलंग साद ज्यूं काळजे में कसकता सावण री सांझ में रूंखां री टूंकळ्यां सूं मोरटहूकां रो सो मधरास ढोळता औ छंद ठेठ देसी ठाठ में मुरधर री महमा रो बखाण करै।

बरसां पैलां मेघमाळ में आं री छटां री गुंथावट सबदां रो बंधज बखाण री कारीगरी अर काळी कांठळ बण उमड़ता घुमड़ता भावां रा बरसाळू बादळा आज रै राजस्थानी साहित में आप री एक निरवाळी छाप छोडी ही। घणी उडीक रै पछै मुरधर रो सांगोपांग सरूप धोरां मगरां डूंगरां अर आखी जीयाजूण री वणराय-रूंखां मिनखापारो जूनी ख्यातां रा सैनाण नुंवैं निरमाण रा सोपरत होता सुपना इण सगळै चौफेर नै समेटता थका घणमोला रतन-जड़ाव रा आभूखणां री ज्यूं छंदां री आ मंजूस खोल र साम्हैं मेली है। लखी विणजारै री हाट ज्यूं दीपती इण पोथी में मिनखां रा अनोखा करतब अर अनूठां करतूतां बळबका गायड़मल मरदां री मरदमी रणबंका सूरां री जीत रा टोडरमल गाता बधावा सेलां री अणियां सूं बाटी सेकता घुडलां रा असवार, डीघा-पातळा बादीला मरछकिया छैल भंवर मरवण रा कोडायत काळी कोसां करला डकाता ढोल कवर तरवारी री धारां सांपडता सावां रा करणहार अगनझळां में सिनान करती सतियां रा झूलरा—एक सूं एक सोवणी मनमोवणी मूंडै बोलती छिब निजरां संजोई है।

चौमासै रा इमरत फळ मतीरा ऊंडैं निरमळ जळ रा साठीका कूवा सरवर री पाळां मंडता तीजां गणगारां रा मळा-खळा बायरां रा धमडका री ताली परभातां गाती बहू बटियां रा जूट झरणां री झगर मगर कर बिलोवण्यां सूं घूंटिये रा डळा काढती धन री धिराणियां धारोष्ण दूध रा झागां रा

उफणता दुहारां सूं फूटती काची सोरम, ढळती सांझ री वेळा, रोही सूं वा'वडती गायां रा खाथा पगां सूं उडती गोधळ, तुळछां रै थान पर दीवा-बाती करती कुळ-बहू, मिंदर में संख रै समचै बाजती झालर रा टणकारा, गुवाड मे भांत-भांत री रामत करती टाबर-टोळी अर बा'रूं महीनां रा परब-त्यूं'हारां में हरख कोड सूं उमर रा पगोथिया चढता, नानी-दादी रै पोपले मूंडै परियां री कहाण्यां सुणता-सुणता लोरियां री थपकियां सूं नपता बाळ-गोपाळ अर और भी अनेक जात री, अनेक रीत-भांत री बान्ग्यां मुरधर रै नुंवै-पुराणै-रूपां रा दरसाव मांडै। इयातां रा बीत्या जुगां री खारी-मीठी यादां रै पछै देस में आई आजादी अर खुसहाली, गांवां रै विगसाव अर सार-संभाळ में लागी पचायतां, मिनख मिनख रै बीच छुआछूत अर भेद-भाव री काची भींता नै ढाहतो भाईचारो, ग्यान री ज्योत उजयाळती पाठसाळा, आबादी नै सींवां में सावटती योजनावां, आद नुंवै जमानै री नुंवी चाल-ढाल अर रगत री बातां भी छदां में छूटी कोनी।

अर आखर में मजूरा-किरसाणां रो खून चूसणिया लोग, ईंधण रै लोभ जडामूळ सूं कटता जगळ, मिनखां रो खाज बण'र होळै-होळै खतम होती जिनावरां री जूण, अर दुकाळां नै हेला मारती परकत रै पालणै पोखी-पळी बजड बणती धरती, विख बुझे तीखै तीरिये सी चूभती आ सगळी पीड छदां री मीड मे बड'र काळजै में ऊंडी उतरती लखावै।

आज जद आखी सिस्टी एकमेक हुवण रो मारग पकड लियो है, तो के छोटा के बडा, सगळा देसा नै ही आगै-पाछै उण ढाळै मे ढळणो पड़सी। फेर देसा मांयला छोटा मोटा प्रदेसा री तो विसात ही काई। वारां तो इण ससारव्यापी बदळाव सूं कोरो अछूतो रैवण रो सवाल ही कोनी। इण फेरबदळ रो अरथाव माडता 'मरु मंगळ' रा कवि मुरधर नै आखै देस रै एक खासा अग रै रूप मे निरख्यो-परख्यो है। अर बोट री, जात री,

दरद री, भ्रस्ट आचरणा री राजनीत नैं आडैं हाथा ली है। नीठा हाथ आई आजादी नैं पाछी नुँवा राजघराणा री वादी वणावण रा कुकरमा रा भाडा फोड्या है। वैं समाज रैं उण हर पख री पोल खोली है जिको दोगलो है, कूड़ो है। वैं उण मिनख-जिनावर नैं चौडैं कर्‌यो है जिको रोही रैं खूखार जिनावर री ज्यू मोकैं री ताक मे, सिकार री घात में दुबक्यो रैवैं। वैं आपरी बुलद आवाज में हेलो दियो है बा सूरा सतवादिया नैं, देसभगतीरा जुझारा नैं, अर समाज रैं हित सारू सरबस वारणिया नैं, सामैं आवण रो अर अन्याय अत्याचार आपाधापी नैं जडामूळ सू उखाड फैंकण रो। कवि री वाणी में सारदा रो विभो अर दुरगा री सगती री अवतारणा हुवैं। लागैं लोग इण रूप नैं, हेलैं नैं साभळसी।

एक और खास वात है कवि री छद-रचणा री ऊची कारीगरी अर सवदा रैं ओपतैं सिणगार री। छदा री पगत पर पगत सेनापति रैं हुकम मे कवायद करता सज्या धज्या सधेडा जवाना री ज्यू प्रयाण रा वाजां री धुन पर एक सुर एक लय में चालती निजर आवैं, अर सवद, चोखळैं खेलता भोळा टावरिया सा, गीतेरणा गायणा रैं कठा रम्योडा, लोक रैं जीवण में ऊँडा ऊतर्‌योडा, नरबदा रैं पूर में गुडता गुडता साळगराम बण्योडा सा सवद, मदारी रैं गोळैं सा कदे हाथां में दीखता दीखता मूँडैं सूँ निकळ पडैं अर पल में फर लीन हो जावैं —इसा चमत्कार करता रिझाता, लुभाता सबद, कवि नैं जाणैं वर्पोती में मिल्या है कैं हेमाणी मे लाध्या है। छदा री अैं झडां अर सवदा री अैं उकत कोरी दिखाऊ वानगी हुवैं आ वात भी कोनी। हर झड री उकत मैं ऊडैं अरथां री पोटळी वधी थकी है, जिण नैं कोई भावना अर बुध रो धणी किसन ज्यू खोल र सुदामा रा चावळां ज्यू चाखैं तो काव्य रसज्ञा री विरादरी धिन हुवैं। *म्हारी अैं ओळ्या कोई मध्यकाळ रा सा बिड़द वखाण कोनी।* अैं साचैं मन सू करेडी एक समरथ लिखारैं री कलम पूजा रा पुसब है।

• शेखावत सुमेरसिंह

इण समूचै वखाण रैं पिछोकड़ै मे कवि री चीतवणी रैं लांबै-चौड़ै आकास री नीली झांई मे एक संपूरणता व्यापी है, अर वा है मुरधर रैं प्राणवत जीवण री सैंजोर धड़कण, जिकी उण रैं हरेक रूप मे, हर रंग मे अर एक्‌एक करम मे अनेक भांत सूं उभर-उभर कर परगट हुवै।

समरथ रचनाया री कूंळी भाव-भोम नैं सबदां-छंदां-अळंकारां सूं परवारी, संस्कृति रा आद् मोलां री ऊंडाई सूं काढ़'र उद्धारणिया वराह-अवतारा री पंगत मे विरळा ही कवि बैठ सकै। 'मेघमाळ' री मंगळ कीरती अर जस रा धणी सुमेरसिंघ इण नुंवैं काव्य मे आप रैं उण कीरतमान नैं विसरायो कोनी—आ घणैं हरख री वात है। वखत रैं साथै ओपतो निखार इण रचणा मे ठौड-ठौड़ झळकै। मन करै 'क इसा कलम रा धणी थोड़ी औंर खेचळ करैं अर धींजैं सूं वेसी विस्तार री कोई काळजयी रचणा माडैं।

282, डी,
मीरा मार्ग, बनी पार्क,
जयपुर (राजस्थान)

—रावत सारस्वत

आगूँच ओळखाण रू-ब-रू :—

आदमी वो'ळी वार चाँद पर जा-जा'र सही सलामत पाछो आयग्यो । मैं खुद हाल ताँई पूरो भारत भी आँख्याँ सूँ अवलोक्यो-विलोक्यो कोनी । लोग लम्बी-लम्बी मुसाफरी चीलगाड्याँ मे उड-उड'र पूरी करली जदकै मनैं खुद री जिंदगानी रा लारला सैंताळीस साल-सईकाँ री जमीन ही ऊँधैं माथैं घणी मुसकलाँ नापणी पडी । आज रा नामी-इकरामी बुधगराँ आपरी जाण मे अणपढ्यो की छोड्यो कोनी । म्हारो हवाल इसोकै काँई पढणो चाइजै, जाण्याँ बिना कदे एक आखर बाँच्यो कोनी । आज रा नुँवा लिखारा अर कवियाँ असाहित री आँगळी पकड'र अमरता रा कीरतमान किताबाँ मे थरप दिया जदकै म्हारी उणाँ सूँ रू-ब-रू जाण-पिछाण भी ओजूँ कोनी हुई । म्हारो अबार ताँई रो आखो लेखण आदत बणावणैं रैं अलावा क्यूँ न काँई । जद-कद जे भूली चूकी कविता आ उतरी हुवै तो धन घडी अर धन भाग ।

आसूदी 'अभिव्यक्ति' रैं अकन कँवारपणैं नैं मैं कविता मानूँ । वा अलवत्ता नुँवी तो हर-हमेस रै'वै, पण पुराणी कदे भी नी पडै । कवाडी री दुकान कविता कोनी', नुँवी कळ बठै अर पुराणो पुरजो अठै । जुड'र कोई मसीन बणैं तो बणै, नीतर वाह भली । कविता जिंदगानी रो एक इसो अणभोग्यो छिण हुवै जिको अकल री चालणी सूँ छाण्याँ स्यात मिलै, पण बेफड मे विन रळकाई कणक ज्यूँ आपूँ-आप लाध जावै । कविताई सेखचिल्ली सा'ब रो 'ख्याल' कोनी जिको 'यथार्थ' री ठोस धरती अर 'आदर्श' रैं असीम आसमान नैं बाताँ सूँ बाँटै, परत आ तो प्राणवत जीवट री जात हुवै जिकी दोनुवाँ री

खाई नें पाटे अर जिंदगानी नें चेतणा सूं साटे । कविता एक हदहीण जातरा सी लखावै । कोई सूंवै-सपाट दही सै दरै चाल'र उण नें पावै, कैई नित नूंवी गेलियाँ घाल'र खेती बिगाडै अर बोळा सा रो'ळा इसा भी मिलै जिका ऊजड-अडावाँ हांडैअर हेरता-हेरता खुद ही गम जावै। दिसा-बोध ही जिकै नें नी हुवै वो मजल पर पूगै तो ? छदाँ री अळियाँ गळियाँ रास रमणो ओखो'क चोखो, रम'र पजोखणिया जाणै । कविता कोई नक-नक-नकडा-बीये बीये च्यार रो पट्टी-पहाडो तो कोनीकै हर आगली ओळी मे आँकडा बदळ जावै। बिना नेट रै टेनिस खेलणै रो काँई अरथ ? गति, लय अर सतुलन रै अभाव मे कविता कविता हो ही कोनी सकै। बिना भीतां रै जे कोई छात ठहरै तो छद-विहूणी रचणा कविता हुवै । कोई हँसी-खेल तो कोनी काव्यकै जी रै जी मे आवै वो ही मच सूं चुटकला सुणा'र कवि होणै रो अमरपट्टो लिखा लेवै । जोगाराम रै मारग सूं भी बाँको मानो कविताई रै करम नै जी रै सूई जेडै नाकै रै आर-पार अनाडी नी निकळ सकै ।

पुराणै प्रबध-काव्याँ मे पद्य घणो अर कविता कम हुया करती । जूनै जमानै मे कवि लम्बी-लम्बी का'ण्याँ कविता रै नाँव सूं सुणाता सुणाता । ठाला भूला तो ठै'डा ही नाखै । पण अब जदकै जुग पळटग्यो अर 'विज्ञान' री दौड-धूप मे आदमी नें पल री फुर्सत कोनी तो कविता रो रूप-सरूप भी मोकळो बदळग्यो । महाकाव्याँ री ठौड पै'ली खण्ड-काव्याँ रो चलण चाल्यो अर अब तो लोगाँ 'छणिका' नें भी काव्य मान लीनो । 'पद्य' काव्य री काया अर 'दर्शन' उण री आतमा मानी जावै । एक भारी भरकम महाकाव्य मे भी काव्य तो हीरा-मोत्याँ री जियाँ हेरेडो ईज हाथ लगै । आज रा प्रबन्ध काव्याँ मे इणी गिणी ओळ्याँ काव्य री परिभाषा मे खरी उतरणवाळी देखण नें मिलै । आटे मे लूण जित्तीक कविता इसी पोथ्याँ मे लाधै बाकी तो घणकरोक ही पद्य हुवै । मनै का'णी कोनी कै'णी, मैं तो कविता रो साँचकलो अरथ कागद पर उतारणो चाहूं ।

एक सुणी श्राम्रपाली श्रर बीजी हुई पदमणी। दोनूं ही फूटरापै री मूंडै बोलती मूरत श्रर स्यातां री श्रणभूली कीरत। पण एक श्राप री कचन-काया नें बेचती-बेचती कोढण बणगी श्रर दूजी श्राप रै सत रो सुबरण जौहर री धू-धू सिलगती चिता पर चढा'र भी श्रमर हुयगी। दोनुवां रो कांई जोडो श्रर वां री कांई बराबरी? भाडै री भारमलो चावै तो श्रातम-दाह भलांई कर लेवै; पण वा सती नी मानी जा सकै। मांझळ रात 'रामू-चनणा' रो गीत कोई की भलै लोगां री बस्ती मे उगेर'र तो देखै! कुवखत गांव-गुवाडी नी छोडणी पडै तो बात कांई!

पुराणा कवि जिकै 'ऐबां' नै जाणता श्रर घणी मुसकलां टाळता स्यात् वां री भरोटी बांध'र श्रळी-गळी कविता बेचणिया श्राज रा घणकराक कवि वां ही श्रोगणां नें गिणावै श्रर कविता बतावै, पण वै दुरगुण तो काव्य-सास्तरयां सूं श्रणजाण्या कतई कोनी। हां, श्रणजाणां नें चकमो जरूर दे देवै। मनें वो गैलो न पूछणो श्रर न उठी कर कठै जावणो।

श्राज रै-रै'र सवाल उठैकै राजस्थानी भाषा कुणसी? खुद राजस्थान रा निवासी श्रर प्रवासी ही श्राये दिन पूछैकै राजस्थानी भाषा की नें मानां? विमलेशजी श्रर नारायणसिंहजी मे सूं कुण राजस्थानी रा कवि कह्या जावै? म्हारो पडूत्तर श्रो ईज रै'वैकै जिका भी राजस्थानी मे लिखै वां सारां नें इण भाषा रा लिखारा मानो। समरथ भाषा उण नें कै'वै जी री कई उपभाषावां श्रर मोकळी बोलियां हुवै। फेर साहितकारा री सैलियां भी तो देखण नें मिलै'क कोनी? जयशकर 'प्रसाद' श्रर मुशी प्रेमचन्द री 'भाषा-शैली' मे श्राकास पाताळ जितरो श्रांतरो लखावै जद'क श्रै दोनूं रा दोनूं ही हिन्दी रा मानीता साहितकार समझ्या जावै, तो विमलेशजी श्रर नारायणसिंहजी दोनुवां नें राजस्थानी रा कवि मानणें मे श्रांट कांई श्रावै? श्रलबत्ता साहितकारां रो श्रो धरम-करम जरूर हुवै'क वै माणक श्रर टकसाळी भाषा ही काम मे ल्यावै जी सूं भाषा मे एकरूपता श्रावै।

असल राजस्थानी भाषा वा जिकी राठौड प्रिथीराजजी बीकानेर मे विराजता थका लिखी अर मीसण सूरजमालजी बूँदी मे बैठ्या मांडी। राजस्थानी वा भी जिकी विरकाळी रा चन्द्रसिहजी बीका अर बिसाऊ रा रहवासी मनोहरजी शर्मा आज तांई उकेरता-अटेरता रिया। बाकी तो घणाकराक नुँवा लिखारा आप-आप री बोल्या ही बोलै। कोई बीकानेर रो बीकानेर मे बूठै तो कोई मारवाडो मारवाड सामो मुड जावै। राजस्थानी कोई नै आवै जद लिखै ना।

राजस्थान मे सवाल साहित रो अजै दर आथ ही कोनी। अठै तो हाल लडाई ही भाषा री चालै। असल मे ईं आखै प्रदेस री मायड भाषा राजस्थानी बाजै। हिन्दी नै उण री ठौड थरपणै री कुचेप्टा आजादी रै पछै मोकळी करी गई। पण वा तो उर्दू री तरै मायड भाषा की देस-प्रदेस री आथ ही कोनी। राजस्थानी नै हिन्दी री उपभाषा अर बोली बताणो सफेद झूठ रै अलावा क्यूँ न कांई। पण सियासतदां लोग मामलै नै उळझा दियो अर सांई-सेरयां वेगोसो'क ओ सुळझतो भी कोनी लागै।

आज राजस्थानी भाषा नै केन्द्रीय 'साहित्य-अकादमी' एक सुतत्तर भाषा रै रूप मे मानत्या देवै, पण भारतीय सविधान री आठवी फडद मे आ सामल कोनी। म्हारी समझ मे जे आखो राजस्थान अर ईं रा सँग प्रवासी उठ खड्या हुवै अर भेळै सुर में मांग करै तो बात वेगी बणै। पण अबार तांई तो खुद राजस्थान मे ईज वापडी-लाण राजस्थानी रा पग पूरी तरियां ठोस जमीन पर जम कोनी सक्या। बोर्ड री 'सैकण्डरी परीक्षा' मे 'राजस्थानी भाषा-साहित्य' एक मनचावू विषय जरूर मानीजै, पण उण रा परीक्षार्थियां री नफरी पांच सौ रै अेडै-गेडै भी हाल कोनी। प्रदेस भर मे फगत एक जोधपुर रै विस्वविद्यालय मे राजस्थानी रो निरवाळो विषय अर उण रो न्यारो विभाग अलवत्ता मैजूद मान्यो जावै जदकै राजस्थान विस्वविद्यालय औरूँ इण रो जोगाड बैठाणै मे ही बो'ळो विलम्ब कर दियो। असल मे राजस्थानी नै हिन्दी-भाषा-भाषी लोगां सोध अर पुरातत्त्व रो विषय बणा लियो। पिंगळ

अर डिंगळ नै सैली री जाग्यां जिका भाषा करार देवै वै ई राजस्थानी री मारफत 'डॉक्टरेट' करै, वां नै वी सूं नौकर्‌यां भी मिलै पण वां नै राजस्थानी री ओकात रो ही अहसास कोनी। राजस्थानी रो 'मिशन' 'प्रोफेशन' रै जरिये कदे भी पूरो नी हो सकैलो। बात जद बणैलै राजस्थान री सरकार ही राजस्थानी नै प्रदेस री मायड-भाषा घोषित करै। इण री पढाई-लिखाई नीचै सूं ऊपर तांई, सिक्सा रो इण नै ही माध्यम मान'र सरू करवाई जावै तो जोत जागै। 'अभिव्यक्ति री उन्मुक्त आजादी' रो नांव आपणै अठै लोकतंत्र मान्यो जावै, जद सुराज आवै। बो'ळा-बहरां रो भी कोई मिनखाचारो हुवैकै वै आजादी रो सही अरथ समझ'र उण नै सारथक बणावैला। हिन्दी नै राजस्थान री 'मातृभाषा' मान लेणो उजाळै मे पोलमपोल करणो समझो। वा राष्ट्रभाषा रो रुतबो राखै अर भारत री एक मात्र भाषा बणै तो ऐतराज री बात कोनी, पण उण नै मरुधरा री मायड-भाषा मान बैठणो अंधेरै रो ईज सबरण मान्यो जासी। सवाल हिन्दी रो कोनी, बो तो सौ टच राजस्थानी रो ही हूणो चाइजै, पण कुण-कुण नै समझावां। अठै तो फागडदा लिखै, छपै अर बिकै जिकां नै हिन्दी अर राजस्थानी रो फूट्यो आंक नी आवै। ओजूं जद राजस्थान खुद ही ऊंचो कोनी उठ्यो तो उण री भाषा ऊपर की'कर उठ सकै ? सिकायत सरकार सूं कोनी, जनता सूं करी जावणी चाइजै जिकी आप रा कण्ठ मोस'र अपघात पर उतारू लागै। आपत्ति जठै अपणायत हुवै, बठै हुवै। अठै तो आजादी ही उधार री समझी जावै क्यूंकै मायड-भाषा रै अभाव मे सुराज कदे आ ही नी सकै।

आजादी सूं पै'ली आ मारू-भोम सही अरथां मे जगळ मगळ ही अर ओढी-पै'री लखावती, पण अब वा बात कोनी। घणकरीक जीयाजूणां समूळ खपगी अर बो'ळी सी बणराय रो निमेडो आयग्यो। ऐडो विधूंस स्यात् पाछला बरसां मे ईज हुयो दीसै। आज जगळ निजरां सूं ओझल हुयग्या डूंगर गजा सा लखावै। वजड धरती बा'ईजै तो कोई एतराज कोनी, पण वनां नै जड सूं

काटणो अर दावणो चोखो कोनी, क्यूँकै वां रै अभाव मे मोकळी हाण हुवै। जीयाजूण री जिदगानी हरियाळी पर निर्भर हुवै। फेर आपां देखां तो रो'ई मे वै जिनावर अब कठै जिका अबार तांई देखण नै मिलता। किताई जिनावरां री जूणां जडामूळ सूं निठगी अर अणगिणत भांत रा विरछ अर बांठ-बोभा लोप हुयग्या। आजादी रो मतलब बरबादी तो कोनीक एक एकलो मिनख-जिनावर जीवै अर बाकी जड-जगत च्यारूं मेर सुनसान सरणावै ?कुण जाणैकै कुण सी जूण बेमाता क्यूं सिरजी अर वा कद आडी आ जावै। कोई कह नी सकै कै जगळ री कुण सी जडी-बूंटी री कमी कद कांई गजब ढहावै। अब मिनखाचारै री जिकर करां तो आज रो राजस्थान घणो ओपरो अर अपरोघो लागै। अब वै मिनख-मानवी ईं इळा-तळ पर कठै जिकां री वातां ख्यातां अर इतिहासां में पढणनै मिलै। मनै तो इयां लागै'क जाणै मिनखादेही मे वां जिनावरां री रूह जनम ले लियो जिका कदे कांकडां री धरती नै खूंदता फिरता अर बापडा बेमौत मारया गया। कद-जद तो ओ भी बहम हुवै कै कठै आज रा मिनखां रै सरीर मे बो'ळा सा भैंसा, घणकराक कूकर-सूकर, मोकळा रो'ईवाळा जिनावर अर अणगिणती प्रेत आतमावां तो मर-मर'र परवेस कोनी कर लियो। मिनखां मे मिनख-पणो कठै हेर्‌यो नी लाधै। आपां गहराई में पैठ'र सोधां तो आज रै ईं भवसागर मे मोत्यां री ठोड कोरा कांकरा हाथ लागै। मिनख-जमारै रो ओ हीरो सो जनम स्वारथां रै सघर्ष मे पड'र आपाधापी रा गेडियां रै टोरां मे दडी री जियां लीर-लीर ह्वै'र धूळ भेळो रळग्यो अर ठौड-ठिकाणै लागग्यो तो आजादी रो कोई अरथ हासल नी हो सकैलो। आपां नै व्यवस्था बदळणी हुवै अर पडै तो कोई आंट कोनी। पण आपां भी अमन-चैन सूं नी जी सकां अर ऊपर सूं कुदरत रै खेलै नै भी प'रो बिगाड द्यां तो आगै चाल'र पिसतावै रै अलावा क्यूं भी पल्लै नी पडैलो।

आज रा महानगरां री जिदगानी होटलां, क्लबां अर सिनेमा-घरा मे सुख सोधती हांडै। वठै बडै घरां री बहू-बेटियां चली जावै

तो वां री काळी करतूतां भी 'कलचर' कहावै; पण जे कोई भूली-भटकी अभागण गरीबणी चूग जावै तो उण री वोई आखो आचरण 'करप्सन' री संग्या में आवै। मैं पूछूं कै ओ भेद-भाव नीं तो ई नै और कांई कै'वां? समाजवाद रा ऐ आसार कोनी। अबै तो सास्तरां रा ही नित नुंवा अरथ लगाया जाण लागग्या। "जीवो जीवस्य भोजनम्" रो अरथ अंग्रेजी अर 'साइंस' पढ्योड़ा मनचला लोग ओ लगावैकै जीव रो खाज जीव अर भांत-भांत रै जीवां रो 'अभोज्य भक्षण' वै करै। मांस ही खावणो हुवै तो खावो भलांई, पण रिचा रो तो ओ मतलब एक सूं लाख कोनी। जीव जीव रो भोजन हुवै अर बिलजरूर हुवै, जियां कुत्तै रो बिल्ली, मोर रो सरप नै सरप रो ऊंदरो अर मीडको; पण मिनख बीजा जिनावरां री तरियां कोरो-मोरो जीव तो कोनी। उण री गणना जीवेतर प्राणियां मे करी जावै। ई वास्तै ल्याळी ल्याळी नै भलांई काचो भखै जदकै मिनख मिनख नैं कोनी खा सकैकै 'जीवो जीवस्य भोजनम्।'

की मनचल्या पडखाऊ बुधगर चारवाक रिखी री रिचा 'ऋणम् कृत्वा घृतम् पिबेत्' री व्याख्या यूं करै—'उधार ल्यावो, घीरत पीवो नै मजा मारो।' आगै सूं आगै वै करज लेता-लेता एक दिन दीवाळिया ह्वै बैठै। ई रो असली अरथ ओ हुवैकै जे करजो ईज करणो हुवै तो घी पीवण रै खातर लो करोकै ताकत वढै अर कमा-खाणै री सामरथ हासल हुवै, दारू पीवण वास्तै नी'क खुद काळीधार डूब जावो अर आगलो कळीतर भी कदे उतार नी सको। आणैवाळी पीढियां थां कुजीखां नैं कोसै अर सिर धुण-धुण'र रोवै? कैवणै रो अरथ अतरो ईजकै जे दुराचरण री दुहाई दियां बिना जक नी पड़ै तो मोकळी द्यो; पण सास्तर नै तो बगसो! उणां री माटी पलीद करणै रो सबब कांई?

आवो, अब आपां समाजवाद री चर्चा करां! समता री सवाल उठै तो सब सूं पै'ली इण उसूल रो खण्डण खुद 'साइंस' ही करै। उण रै मुताबिक कोई भी दो जिन्सां चावै जड हुवै भावै चेतण

बिल्कुल अनुरूप हो ही नी सकै। खुद कुदरत भी इकसार कठै लखावै ! डीघा डूंगर, ऊवड़-खावड मगरा, डूंगा दरियाव, समतळ मैदान अर भांत-भंतीला प्रान्तर परकत री विषमता रो हूंकारो देता सा लागै। मैं मानूं कै समाजवाद आवै अर बिलजरूर आवै; पण वो कुदरत ल्यावै। आदमजात री औकात कोनीकै वो असमानतावां नै जडामूळ सूं उपाड फेंकै। परकत आप रो समाजवाद पीढी दर पीढी ल्यावै। वा लब-तडग ताड सै बाप रै अठै बौनो वामन पैदा कर सकै, मूरख री औलाद नै अकल रो उजीर बणा सकै अर काळा कळूटा मायतां री जावै नै गोर-निछोर कर नाखै। जदि कुदरत रो विधान समाजवादी हुयो हुतो तो बुधगरां री बसत्यां न्यारी अर डफोळ सखां री ढाण्यां निरवाळी होती। पण कुदरत रै समाजवाद रो विधि-विधान देखोकै पुस्त दर पुस्त समानता आपूं आप आती जावै अर कठै कोई पत्तो तक नी खडकै ! म्हारी धारणा मे परमेसर री बणायेडी जातां दो ईज हुवै—एक नर री अर बीजी नारी री। बाकी री रचणा तो खुद आदमी री ही खुराफात जेडी लागै।

मैं हिन्दी अर राजस्थानी दोनूं भाषावां मे लिखूं पण राजस्थानी सूं घणो लगाव राखूं। मैं खळखोटो ले'र मिंदर जाऊं, गळ-गचिया खाऊं अर धाप'र धड होऊं, राजस्थानी मे क्यूं मांडूं अर वो छपै जद स्याऊं। बी रो ऊदो जागै तो म्हारो 'कैरियर' बणै। ना तो मैं म्हारो आदू बाप अर नांही आखरी वसज आप। ई वास्तै नुंवा पुराणा चोखा साहितकारां नै पढूं अर वां री जाणकारी भी मनै कम कोनी। क्यूं कठै सीखण नै मिलै तो बिलजरूर सीखूं; पण ऊंठ अर कूंठ खाणो म्हारै बस री बात नी। म्हारा बडाबडेरा तलवार चलाता अर मैं कलम चलावूं। लेखण मे तेजतर्राट तीखापणो कठै जे सरक मार जावै तो उण नै खानदान रो असर समझो। एकदम तो कोई बदळ कोनी सकै। कलम री कमाई खाणो म्हारो 'प्रोफेशन' कोनी। कविताई तो मे 'मिशन' रै वतौर ही करूं। अकविता सूं म्हारो वास्तो नी।

बरसाँ पैली मैं 'मेघमाळ' श्राप नै नजर करी जी री वाहवाही पारखी विद्वानाँ री तरफ सूँ मनै मोकळी मिली । अब श्रा नुँवी बानगी श्रापरै श्रागै हाजर करताँ घणो श्राभार मानूँ श्रर मैं चावूँलो कै राजस्थानी रा हिमायती ईं नै पढ़ै श्रर म्हारो मारग-दरसण करता रै'वै । श्राप सगळा सुभचिन्तकाँ रो भरपूर स्नेह मनै मिलैलो—ऐड़ो मनै पक्को भरोसो जाणो ।

राजस्थानी रा मूर्धन्य प्रणेता, 'मरुवाणी' रा सरनांव सम्पादक मानीता रावतजी सारस्वत रै श्राभार सूँ मैं सात जनम भी उरिण नी हो सकूँ । वै ही मनै हिन्दी सूँ राजस्थानी मे ल्याया श्रर पग-पग पर म्हारो हियाव बधायो । म्हारी जाण मे वाँ सूँ लूँठो राजस्थानी रो जाणकार श्राज दूजो कोनी । लोग खुद लिखै श्रर वै लोगाँ सूँ लिखवावै ।

फेर मैं सैंग साथियाँ श्रर सहयोगियाँ रो श्रन्तरमन सूँ स्नेह स्वीकारूँ श्रर वाँ सारा लोगाँ नै चीत करणो म्हारो धरम मानूँ जिकाँ रै बळ बूतै श्रो इत्तो बडो काम श्रासानी सूँ हुयो । साभार,

रखपुन्यू, सवत २०३६ वि०
श्रानन्दनगर,
सीकर (राजस्थान)

—सुमेरसिंह शेखावत

मरु-मंगळ

ओप—

—मरुवाणी मिसरी अणछॅठी

(अधुना राजस्थानी रो सबळो सदर्भ-काव्य)

□

म्हारा
पावन पिता
सुरगवासी ठाकुर रूपसिंहजी, सरवड़ी री औंजस
भरी याद नैं ज्यां री ईमानदारी अर नेकनामी
आज भी मनैं जुग-बोध करावैं !

□

रखपुन्यू :
अलका,
आनन्द नगर,
सीकर (राजस्थान)

—शेखावत सुमेरसिंह

अस्तुति

सतगुरु, सिवरूँ, सिव, सिर नाऊँ,
नुवाँ-पुराणा भेद बताऊँ,
मिनखाँ रा मंगळ गावूँ,
मातभोम पर बळि-बळि जावूँ!

मात सारदा जिण पर तूठै,
वरदानाँ रा वादळ वूठै,
जस–कीरत री किरणाँ फूटै,
ओपै कविता, दाळद छूटै!

अमर आतमा, उमर हजारी,
जूणाँ-जूण जनम री बारी,
दो दिन दुनिया, थारी-म्हारी,
नर नारायण, माया नारी!

परवेस

विधना नै जीव जणी कोनी,
वा इण रै पाण वणी कोनी,
कुदरत रो मिनख धणी कोनी,
की नर नै नियति हणी कोनी!

मिनखाँ रो मोल मणी कोनी,
हीरा खुद खाण खणी कोनी,
सोनै री साख घणी कोनी,
वेमाता वाँझ वणी कोनी!

गणिका रो गोत सती कोनी,
व्यभिचारी प्राणपती कोनी,
मुसटडा मोड जती कोनी,
विधना रो वही खती कोनी।

कलमाँ रो कोल टळै कोनी
स्याही अणतोल गळै कोनी,
कविता अणमोल खळै कोनी,
वाणी रा बोल बळै कोनी।

मैं पायक राम-रजाई रो,
गण गायक भारत माई रो,
अपणायक आरत भाई रो,
वरदायक कवि कविताई रो।

मावड रो करज चुकावण नै
कुदरत रो हरज उकावण नै
लेखण रो फरज निभावण नै
कवि पाळै गरज' धिजावण नै।

वाणी मा, तनै मनाऊँ मैं
की लायक कवि वण जाऊँ मैं,
निज भासा नै अपणाऊँ मै,
मुरधर रा मगळ गाऊँ मै।

म्हारो मुरधर मोराँवाळो

इण जगती में नौलख तारा,
लखचौरासी जीव - जमारा,
आँ मे मिनख - मानवी सारा,
सब सूँ न्यारा कामणगारा!

जीवाँ में सिरमौड़ मानखो,
आप - आप री ठौड़ मानखो,
एक - एक री होड मानखो,
खुद रो खुद ही जोड मानखो!

नभ - थळ - जळ री खाई पाटी,
जीव - जमारै जूणाँ साटी,
आखी इळा . आदमी लाटी,
पुळकै पाणी, मुळकै माटी!

देव बण्याँ इन्द्रासण धूजै,
दैत जण्याँ तिरलोकी पूजै,
तीनूँ काळ मिनख नै सूझै,
सुरग्यानी नै विधना बूझै!

नभ में उड़ै गरुड़ री नाँई,
समदाँ तिरै वरुण री जाँई,
इण रै ताँई मुसकल काँई?
अचरज करै निरख नित साँई!

मिनखपणो तो जीवटवाळो,
जस - कीरत रो लोक उजाळो,
पुन्याई पर पड़ै न पाळो,
पुरसारथ रो राम रुखाळो!

ईं धरती पर देस घणेरा,
अळगा - थळगा टुकड़ा - टेरा,
नुंवा - पुराणा, तेरा - मेरा,
भारत में भरतां रा डेरा!

मस्तक मूकै गगन हिंवाळै,
सागर जिण रा चरण पखाळै,
सोनचिड़कली जे'ड़ै ढाळै,
भारत गुरु - पद - ओप उजाळै!

बी रा वासी काळा - गोरा,
दीन - धरम रा लागै पो'रा,
डीघा डूंगर, धवळा धोरा,
ईं मुरधर रा मिनख सँजोरा!

आण समो ऊँचो आडावळ,
पत री पैठ सरीखी चामळ,
सत सूं सारी माटी निरमळ,
जस-कीरत री ख्यातां निसछळ!

पग - पग पावन, गग - कठोती,
मण - मण माणक, कण - कण मोती,
हिम्मत - हीरा, जीवट - जोती,
डगळ - डगळ देव - मनोती!

काळी कोसा मानव - वस्ती,
बीघै - बीघै दानव - हस्ती,
बिस्वै - बिस्वै नाग - परस्ती,
खुणस बिलान, आँगळाँ खस्ती!

इळा मोकळी, जळ रो टोटो,
कुदरत रै हाथाँ मे सोटो,
दुख-दाळद रो जीवण खोटो,
मिनखाचारै माणस मोटो!

इण मुरधर रो काँई कै'णो—
सब कुछ सै'णो, बोल्यो रै'णो,
सरवस वार चुकावै लै'णो,
गौरव बेच न भावै गै'णो!

ऊनाळै मे चालै लूवाँ,
बाळू भुनै धरण रै तूवाँ,
नीर निठै साठीकै कूवाँ,
तिस रै थकाँ पसीनै चूवाँ!

चोमासै री फसल पसेवाँ,
काँठळ उमटै बीजळ - खेवाँ,
नभ गरजै, धर धूजै मे'वाँ,
निपजै नाज बरस - फळ टेवाँ!

बड़भाग्याँ रो रतन सियाळो,
भाग भोगियाँ, रोग दिवाळो,
डाँफर चालै डाक हिंवाळो,
चमक चाँदणी, तिमिर तिंवाळो!

मिन्दर - मिन्दर झालर वाजै,
मधरी - मधरी नोपत गाजै,
संखाँ फूँक ग्रलख री राजै,
कळजुग - काळ कळपता भाजै!

पुन्न - पुनीता गगा - गीता,
सत री पत पदमणियाँ-सीता,
ग्राण - बाण मरजाद जणीता,
मुरधर हंदा मिनख नचीता!

म्हारो मुरधर मोराँ वाळो,
डूँगर - मगराँ - धोराँ वाळो,
डाँफर, लू ग्रर लोराँ वाळो,
'जण - गण' जीवट - जोराँ वाळो!

पोखर - ताल - तळाव - हिलोराँ,
तीज ढुकै, पूगै गणगोराँ,
गाव - गोरवै - कांकड - कोराँ–
जगळ - मगळ आठूँ पो'राँ!

बळ-वकां नै धर कद नाटी?
बा'रा लोप डाकण्यां डाटी,
मरद एकलो लादै छाटी,
गासूँ गास जीमले बाटी!

श्रो मुरधर तो राँगरँगीलो,
जावक जूनो भाँतभँतीलो,
भेख सुरग, सुभाव रसीलो,
ठाट - वाट मे साजसजीलो!

ईण मुरधर रो मरद हठीलो,
बाद करै, बाजै वादीलो,
डीघो - पतळो नर गरवीलो,
ढीलो ढोलो, छैलछबीलो!

इमरत फळ अणमोल थळी रा,
मूण - मूण रै मान मतीरा,
काकडियाँ रा लाँबा - लीरा,
खट - मीठा ज्यूँ भाग धणी रा!

खो'डाँ खीप काँकड़ाँ काँटी
जो'डाँ कैर, फोगडा, जाँटी,
दुरवा - डा'ब अडावाँ आँटी,
खेडाँ खात आकडा बाँटी!

आण अडै असमान उताळाँ,
पत रा पग पूगै पाताळाँ
सत री साख बहै नद - नाळाँ,
जगळ - मगळ रहै दुकाळाँ!

इण मुरधर रा जौहर - साका,
इतिहासाँ रा अमर धमाका,
सीस - बिहूणै धड री हाकाँ,
देख धूजता बैरी बाँका!

म्हारो मुरधर नुँवो - पुराणो,
बजड खा'णो काम कुराणो,
नर-मुण्डाँ रो नेग चुकाणो,
आदू आगीवाण उभाणो!

ओ 'गण' गीताँ - भीताँ वाळो,
अजब - अनोखी रीताँ वाळो,
परख - पजोखी प्रीताँ वाळो,
एक प्राण मन - मीताँ वाळो!

 • शेखावत सुमेरसिंह

इण धरती नै जगत पिछाणी,
ऊँचा धोरा, ऊँडो पाणी,
मधरा माणस, इमरत वाणी,
आण - वाण - मरजाद पुराणी!

सत रो सूरज, पत रो पाणी,
जतियाँ - सतियाँ री सैं'नाणी,
जस - कीरत रा मगळगाणी,
मिसरी - मीठी मा मरुवाणी!

म्हारो मुरधर कामणगारो,
सुगणी साँझ, सुरंग सुवाँरो,
परकत बरकत, भाईचारो,
देवाँ - दुरलभ मिनख - जमारो!

आ जंगळधर रगत - पखाळी,
प्राण - पसेवाँ इळा उजाळी,
नार सुलखणी संचै ढाळी,
नर री खिमता नाहरवाळी!

घेर - घुमेर घाघरै वाळी,
घूँघटिये री धण नखराळी,
गोर - निछोर म्होर टकसाळी,
ईसरजी री सागण साळी!

तन - तरणोट ताड सी तगडी,
अग अँगरखो, माथै पगडी,
गिरियाँ घोती, पगाँ मोचडी,
मुरधर रो नर निरख दो घडी।

मुरधर जूझ्यो काळ - दुकाळाँ,
अरि - दळ दळ्या दाळ ज्यूं गाळाँ,
मातभोम हुळसी प्रणपाळाँ,
पदमणियाँ भुळसी चित - चाळाँ।

मरु रा मारग काँटकँटीला,
विपम इळा तळ ग्राँटग्रँटीला,
मिनख - मानवी भाँतभँतीला,
मेळा - खेळा राँगरँगीला।

सेखैजी री सेखावाटी,
डीघा डूंगर, बाळू माटी,
जण मे जाट, जगळाँ जाँटी,
बुध री भूर वाणियाँ वाँटी।

बिखम थळाँ बिलसै बीकाणो,
बाकळ पाणी जीव – बिरा'णो,
जगळधर नित - नेम निभाणो,
मिरग, मतीरा, नर निपजाणो।

मारवाड वाजै नौकूँटी,
भाटाँ - भराँ - भाखराँ - भूँटी,
लाम्वा लोग, लुगायाँ लूँठी,
मरुवाणी मिसरी ग्रणऊँठी।

जूनो जैमलमेर जुझारू,
नर – नारी ज्यूँ 'ढोला - मारू',
वजड भोम ग्रकाळाँ सारू,
जीवट सेर्याँ साँस उधारू।

मरदानो मेवाड कहीजै,
ग्राण – वाण रै पाण पतीजै,
सिर सूँपै, पण धर नी धीजै,
इतिहासाँ मे साख भरीजै।

वनखण्डाँ मे वाँकी वूँदी,
नवहत्था नाहर धर खूँदी,
हाडा – गाढा – फौज – फफूँदी,
ग्ररि री ग्रकड कांकडाँ रूँदी।

कोटो मोटो जळ रो लोटो,
चामळ छिडकै मार क्छोटो,
कमतरियाँ रै काँई टोटो,
विणज - वजाराँ धूमै घोटो।

दर दिखणादो दूर – आँतरो,
जणपद झालावाड साँतरो!
राज – सिरोही और भाँत रो,
आबू ऊँची न्यात – पाँत रो!

माँझ मेरवाड़ो उपजाऊ,
मिनख मुलाऊ, बळद विकाऊ,
हेर – फेर मे सदा अगाऊ,
पुस्कर – न्हाऊ दरगा - जाऊ!

अणखे दुनिया गळती लाजै,
पण जैपर मे गळतो राजै,
मिनख – जिनावर भेळा भाजै,
वा ढूँढाड़ वेभड़ी वाजै!

लूँठा जाट भरतपुरवाळा,
मुगल – फिरगी फिर्‍या उपाळा,
चिण दी भीत धूळ री ताळाँ,
लग – लग गोळा मि'लग्या आळाँ!

अळगो – सळगो गण हरियाणो,
बैर चुकाणो, नेह निभाणो,
मुरधरिये रो मीत पुराणो,
मरुभासा रो एक ठिकाणो!

• शेखावत सुमेरसिंह

परभात्यो तारो उठ जोणो,
करम – धरम हित ऊभो होणो,
घमड़क – घमड़क घट्टी भोणो,
घमड़क – घमड़क दही बिलोणो!

मारग बगता भरी कतारां,
खळ – खळ पाणी वहतो वारां,
धरमर – धरमर दूध दुहारां,
पौ फाटै अब कठै बुहारां!

तड़कै उठणो, सोपैं सोणो,
कमतर करणो, दाळद धोणो,
जस – कीरत रा मारग जोणो,
जती – सती नर – नाहर होणो!

गोधळकै गायां चर आती,
सातूं संज्या दीवा – बाती,
ब्याळू बगत रसोई भाती,
सोपै नींद – परी वतळाती!

गांव – गुवाड रमण रै तांई,
टावर आप – आप री दांई,
रो'ळ मचाता, घलती घाई,
'आंधो भैंसो, रतन तळाई!'

कठै हरदड़ा, मो'ई - डवा,
मारदड़ी रा वार निसका?
गांव - गुवाड़ राकसी लंका,
वसै विभीषण बुध - वळ - बका।

वा'वड़ती जद तीज - तिंवारां,
हीड़ा घाल हींडती नारां,
मूसळधारां - मीठी मारां,
सावण भावण करसण - वारां।

मभ विरखा रुत भादूडै री,
रखपुन्यू जुग आदूडै री,
जती - सती अर साधूडै री,
राखी साखी जादूडै री।

आसोजां रा मे'वा मोती,
नवूं नौरता बरत - मनोती,
राम - चरित री लीला बोथी,
दसरावो रावण री पोथी।

सीयाळै री रुत रतनाळी,
काती आध ऊजळी काळी,
सरद - चांदणी दूध - पखाळी,
अमा उजाळै घप दीवाळी।

• शेखावत सुमेरसिंह

फागणिये री रुत पुळकाती,
वस्ती फाग - धमाळाँ गाती,
गीदड घलती, होळी ग्राती,
घूमर - लू'र - गै'र गरणाती।

चैत चहकतो जगळ - जोडाँ,
फोग फूटता काळी खोडाँ,
च्याव चौगणो, दिन दर थोडा,
पुजती गोर, दौडता घोडा।

डूँगर - डूँगर - खोहाँ - खा'ळाँ,
नवहत्था नाहर नद - नाळाँ,
भाखर भाखर मगरै - माळाँ,
बीड भर्या रहता डाढाळाँ।

वजड - वाढाँ - बाँठाँ - बोझाँ,
विदकणिये रोझाँ री फोजाँ,
पग - पग लूँकाँ करती मोजाँ,
रातूँ रोळ गादडी चोजाँ।

बिल - बिल्न वसती सँठी कोळाँ,
वूच काटती कान किलोळाँ,
वोडबिलाव बोलता वो'ळा,
घूघू घणा मचाता रोळा।

चदण ओंर पाटडागो'ई,
खेत - अडावां रो'ई - रो'ई,
नाग - नागण्यां पीढ़्या बोई,
मुरधर कदे कांपतो सो'ई।

तीतर - बुटबड ओर तिलोरां,
गोडावण, सारस, बनमोरां,
मुरधर कदे मुळकतो लोरां,
सूनी आज खितिज री कोरां।

सोनचिडकल्यां, खोडयो खाती,
जळ - मुरगाब्यां, बुगला घाती,
ताल - तळावां लै'र्या गाती,
हंस उतरता, कुरजां आती।

जगळधर री ख्यात पुराणी,
जी री भोत मिलै सैनाणी,
जिनगानी री बात कुराणी,
कोसां अठै न मिलतो पाणी।

देसी राज विदेसी पूज्या,
मातभोम रा पूत अमूझ्या,
'जै सुराज' रा नारा गूंज्या,
गळी - गळी मे जोधा जूझ्या।

• शेखावत सुमेरसिंह

राज चलाता राजा - राणी,
ज्यां री फूट परायां आणी,
पोलां ढोल घुरावण ताणी,
फौज ओपरी नितका आणी!

पै'लीपोत तुरक घर दावी,
जी नै फेर फिरंग्यां ढाबी,
देसी न्योळ, विदेसी चाबी,
जद - कद ताळा तुड्या जवाबी!

पातळियो परताप तगड़िया,
दुरगादास मोकळा लड़िया,
डूँगो और जुँवारो भिड़िया,
भामासाह - बजाज पगड़िया!

माणस मर्‌या हुई बरबादी,
मुहँगै मोल मिली आजादी,
इंकलाब री आई आंधी,
आगीवाण बण्यो जद गांधी!

इंस्वी सन री पंदरा अगस्त,
उपमहाद्वीप रो उदै - अस्त,
आजाद मुलक, पण घंणा - ग्रस्त,
बंट - कट ओ भारत हुयो त्रस्त!

लोह पुरुप कीधी सरदारी,
रजवाड़ां री आई वारी,
सब नै एक करण री धारी,
राजस्थान बणायो भारी!

सन पचास छब्बीस जनवरी,
संविधान री मांग खुद भरी,
ईं तिथ रो दिन वड़ो नखतरी,
'जण - गण' री सौगात रसभरी!

अपणो राज, आपणै तांई,
अपणै जरिये नृप री नांई,
हिन्दू - मुस्लिम - सिख - ईसाई,
जैन - पारसी भाई - भाई!

परमवीर पीरूसी पै'लो,
सैतानो सारां सूं सै'लो,
नै'लै पर मुरधरियो दै'लो,
भारत जुग-जुग याद करैलो!

बात भली लागै हुंकारां,
मिंदर झालर, फौज नगारां
नुंवी - नवेली धण चौवारां
कुरज कतारां, मिरगा डारां!

घर - घर - ग्रांगण - डै'लै - डै'लै,
ग्राज कठै टाबरिया वै'लै?
नानी उठै न दादी सै'लै,
लोक - कथा नी पसरै - फैलै!

फोफळियो सो मुँह मटकाती,
दादी - नानी हँस बतळाती,
का'णी कै'ती, लोरी गाती,
छोरी - छोरां नै विलमाती!

'मा री मावड, म्हारी नानी,
ग्रब तो देख टाबरां कानी,
कुण हो मूँजी, कुण हो दानी?
सांची बात राख- मत छानी!

'सुणो टाबरां, म्हारी वाणी,
जूनै जुग री वात पुराणी,
नर -हो राजा, नारी राणी,
सदा सनातन - नूतन का'णी!'

विणज भूल लक्खी विणजारो,
हाट 'पाग' सूँ साट विचारो,
सैंक बतळावै धण सूँ न्यारो,
'बाळद विकगी, कटग्यो नारो!'

'हँस मिठ - बोली घण विणजारी,
गीताँ गमगी कामणगारी,
वात - बात अव रहसी थारी,
सैठो सकट, विपदा भारी!'

स्यामखोर दुरगै री नेकी,
अरि री कैद वाड़ ज्यूं छेकी,
से'ल अण्याँ सूं बाट्याँ सेकी,
भोम भोमियाँ, भुज - वळ टेकी!

सूरजमल, पीथळ अर मीराँ,
कविताई री अमिट लकीराँ,
अळियां - गळियां, ईराँ - तीराँ,
हीरा - मोती - लाल जखीराँ!

पीर राम दे पुजै रुणीचै,
गूगो निज मेड़ी - ठाँईचै,
हठ हमीर सूं नीचै - नीचै,
मीराँ साध - साधव्याँ बीचै!

सुबरण मिरगो, सीता माई,
सुगरी वैनड़, नुगरो भाई,
चंदण चढ़गी सोनलवाई,
लोभ करणिया साख गमाई!

सतियाँ ढोल, जुझार नगाड़ाँ,
पाँच पीर पण पुजै पवाड़ाँ,
पाबू री फड़ बँचै गुवाड़ाँ,
ऊँट अबीणा चरै उजाड़ाँ!

आधी रात ऊँघतो सोपो,
भोपी गावै, नाचै भोपो,
'रावण - हत्यै' रा सुर ओपो,
अमराँ रो जस मतना लोपो!'

'आण - बाण विन गायाँ घिरसी,
देवल लाण कूकती फिरसी,
जस - कीरत री केसर खिरसी,
मरजादा री सोढ़ी ठिरसी!'

सिन्धू राग साँतरी मांढ़ाँ,
फाग - धमाळ - लू'र री बाढ़ाँ,
लोकगायकाँ रा सुर गाढ़ा,
हुयग्या लोप - घूँघटा - दाढ़ा!

ऊजळदंती धण सिणगारी,
पकड़ फावड़ो, उठा तगारी,
जसमा ओडण सबळा नारी,
प्रेत - आतमा फौज खँगारी!

मूमल - मरवण धण गीतां री,
विकै वजारां छिव भीतां री,
सोढो सोधै थर प्रीतां री,
ढोलो ढूंढै धर रीतां री।

लिछमी मि'लगी आप अडाणै,
सुरसत वोळी - गूंगी जाणै,
दुरगा हां'डै पगां उभाणै,
सिंघवाहणी वेद बखाणै।

ओढण नै ओढणियो कोनी,
सिणगारी भल नांव धरो नी,
लखण - बायरो काव्य खरो नी,
लिख - लिख भावै भुवन भरो नी।

ल्यो गया बीत पैंतीस वरस,
ज्यूं आजादी नैं रह्या तरस,
पण खुसी कठै अर कठै हरस,
स्वाधीन देस ज्यूं चिलम - चरस।

अबै कठै वो मुरधर जूनो,
नित - नेमां रो जठै सतूनो?
सवा पो'र रो तडको सूनो,
जावक जड भांभरको मूनो।

• शेखावत सुमेरसिंह

डोकरियाँ वेगी उठ जाती,
काती न्हाती, हरजस गाती,
पणियार्‌यां पणघट पर जाती,
दोघड़ माथै अधर उठाती!

कटग्या जंगळ, खपगी जूणाँ,
मिनख – जिनावर कूणाँ - कूणाँ,
निठग्या साधू, बुझग्या धूणा,
पीठ उगूणी, मुख आथूणा!

सूनसट्ट सरणाटै सोई,
रुळगी वनखण्डाँ री रो'ई,
संकर वीज साख नैं खोई,
मिनखपणै रो मोल न कोई!

काँकड़ लागण लाग्या सूना,
निठग्या जीव – जिनावर जूना,
मिरगा उडता – फिरता पूनाँ,
सुसियाँ रा तन चूता खूनाँ!

कटग्या जंगळ – मंगळ नाँई,
निठगी जूणाँ, नटग्यो साँई,
जीवै मिनख पेट रै ताँई,
आजादी रो मतलब काँई?

एक साँवरो समरथ साँई,
जूणाँ सिरजी जीवण ताँई,
जीव जीव नै भखै भलाँई,
मानव फगत जिनावर नाँई!

लख चौरासी जूण निठी तो,
कट – कट नै वणराय सिटी तो,
पुन्याई अपघात पिटी तो,
खैर नहीं, मरजाद मिटी तो!

मिनख जिनावर जितरा खाया,
वै सारा माणस बण आया,
जनम – जनम जूणाँ री माया,
इण खातर नित वधै रिश्राया!

लौह – श्रावरण छाँट छणै नी,
ग्यान गुणै वो जीव हणै नी,
कळ-पुरजा जड़, मिनख जणै नी,
मिनखपणै बिन बात बणै नी!

कामधेण सी धरती - माता,
जीव – जीव रा नेड़ा नाता,
वनखण्डाँ रा खुल्ला खाता,
सायर सेवै, देवै दाता!

अम्बर जूनो, इळा पुराणी,
पून पवित्तर, निरमळ पाणी,
भूत – भविष्यत – मझ मिजमानी,
'नुँवी – नवेली नित जिनगानी!

घणो पुराणो चावळ चोखो,
नुँवी साख रो मूँग अनोखो,
रांध खीचडी जीमो – पोखो,
न्यात–पांत इण भांत पजोखो!

जंगळ–मगळ घर जग जाणी,
जण–जण राजा, रैयत राणी,
पांच क्रोड कण्ठां री वाणी,
राजस्थानी क्यूँ अळखाणी?

कुण कै'वै आजादी आई,
घर–घर घूरै लोग–लुगाई,
दिल्ली मे दिल्ली री जाई,
अळियां – गळियां गमी–गमाई!

इण्या–गिण्या सुरगां रा साळा,
सेस उभाणै पगां उपाळा,
अपच–अमीरी रै पड़नाळां,
भूख – गरीबी ठेट पताळां!

लोकराज जुग री मजबूरी,
आजादी री आस अधूरी,
धन दस्तूरी, धिक मजदूरी,
कमतरियाँ पर हँसै हजूरी।

अब ओ मुलक सोपकाँ सारू,
आजादी रा अरथ उधारू,
धन्ना सेठ कुबेर हजारूँ,
कोडाँ कोड दीन किम वारूँ?

ऋण्णा, त्रण्णा जावक नगी,
त्रण्णा, त्रिग-तिस तीन तिलगी,
आपूँ आप लगाय अटगी
भू-सुर बूड्या वण सरभगी।

ठाकर बाजै, जिको ठगावै,
ठग वो, ठगै, कळक लगावै,
सुगरो नमै सपूत कहावै,
मालभोम हित सीप कटावै।

ठाकर ठगै, ठाकरी हूँठी,
घो किम कटे, कुँहाडी भूँठी,
मजवूती रजपूताँ रूठी,
बीती बात न आवै पूठी।

 • शेखावत सुमेरसिंह

साखविहूणी साहूकारी,
चोर वण्या कोड़ीधज - धारी,
बादी - अपच तणी लाचारी,
भूख - गरीबी ग्रास उधारी!

ग्राज पगँरखी बँधगी माथै,
पगड़ी रुळै पगाँ रै साथै,
जती - सती नै दुरजण नाथै,
पुन्न पिटै पातक रै हाथै!

मुरधर हामी मिनखपणै रो,
ग्रो सुराज ग्रब जणै - जणै रो,
मोत्याँ मुहँगो मोल चणै रो,
ग्राज राज दर एक घणै रो!

लाला - काला गड़बड़झाला,
माँडै खरड़ा बैठ्या ठाला,
कलम कान में जाणै भाला,
बुध रा बाण, ग्रकल रा माला!

ग्रासूदो जुग - जोवन कोनी,
पीतळ छेतै जड़िया - सोनी,
पापड़ बेलै परकत मौनी,
माड़ी नीतो बरकत - बौनी!

कचन - कचन, गोरी - गोरी,
कुरसी - कुरसी - मैया मोरी,
हत्या - हत्या चोरी - चोरी,
वलात्कार अर सीनाजोरी!

कुरसी मैया, भव री नैया,
हाय – हाय, दर दैया – दैया,
धूप – धूप धप, छैयाँ – छैयाँ,
काँव – काँव अर कैयाँ – कैयाँ!

साँग – सचेता, जुग – जेताजी,
सुख – लेता अर दुख – देताजी,
सत – विक्रेता, मत – क्रेताजी,
नीत – निगोडा नग नेताजी!

चौधर छोडो चर चेताजी,
खेत खरीदो खर खेताजी,
बरकत बिगड़्या विधि – वेताजी,
बैरबिहूणा अरि, हेताजी!

एक नार अम्बर सूँ अडगी,
वाकी लाण जमी मे गडगी,
नागर वहुवाँ नर सूँ लडगी,
गाँव – गँवारू विल मे वडगी!

मेमां वणगी अधुना गोर्‌यां,
छाणा चुगै गांव री छोर्‌यां,
करै 'कैबरा-डास' ठगोर्‌यां,
नाज – काज रै बदळै म्होर्‌यां!

सावण – सावण प्लावन - सूखो,
आँगण – आँगण माणस भूखो,
धीणै – धापै भोजन लूखो,
खेतां ऊभो मिनख बिजूखो!

पैली खावन अब पति पावन,
नांव नुवां अर अरथ पुरातन,
मत्री राजा, सेस प्रजा – जण
भगी भगी, बामण बामण!

नोट – वोट रा जड उपासको,
दळ - बदळू नर नेह – नासको,
लदन – वासिंगटन'र मासको,
सैल – सपाटा करो सासको!

सस्त्रति री नीलामी ठेकां,
मीत न एक, कुमीत अनेकां,
फैसन बदळै नित नव भेखां,
मरजादा री मिटगी रेखां!

सत्ता – भत्ता नव आकरसण,
धूतव – धत्ता जुग रा दरसण,
सेत आभरण, हीण आचरण,
स्वारथ – गारत आरत जीवण।

नाटक – नाटक, मचन – मचन,
काया – काया, कचन – कचन,
माया – माया, मानस – मथन,
साप – ताप – परिताप – प्रभजन।

सूद – सूद अर रिस्वतखोरी,
लूटो – खावो, भरो तिजोरी,
पीवो प्राण झूठ भख कोरी,
करै अचम्भो सिद्ध – अघोरी।

बाबल बणग्यो 'डैडी – पापो',
मावड 'मम्मी' दूध न आपो,
कूख कुँआरी जण – जण जापो
भ्रूण भखै तो धिक फुटरापो।

'पो – पो – भों – भो' आठूँ पो'रां,
सोसण घणो, प्रदूसण जोरा,
अणु – परमाणु बमां रा टोरा,
खळक – फळक रा दिन दर फोरा।

नर - पसु निरमम फगत कसाई,
चुग - चुग जीयाजूण खपाई,
'फरनीचर' अर ईंधण तांई.
जड़ामूळ सूं वणी कटाई!

अपणायत अव वैर विडावां,
दूध - मळाई वोड़विलावां,
हंस कांकरां, काग जड़ावां,
छाछ छिटक दी, चढगी चा'वां!

आखो ओप आदमी ऊंठी,
कैवत सांची, बक - भख भूंठी,
रिपियो - राध कुळ ज्यूं खूंटी,
काळजयी पोथ्यां बुध - बूंटी!

साधू बादू चंट चेलियां,
खेत भिळै जद घलै गेलियां,
विगड़ै जाट चिणाय हेलियां.
घरम थेलियां, राज रेलियां!

काम करै सो, राम भजै वो,
तप तकलीफां, त्याग सजै जो,
लाग लगावां, मोल मजै रो,
भागी भोगै, खाज खजै तो!

कमतरियाँ री साख अगेती,
करमठोक री फसल पछेती,
धरती – खेती धणियाँ सेती,
खेचळ बिन कद किस्मत चेती!

अकल बिहूणो ऊँट उभाणो,
बुध बिन बळ रो कठै ठिकाणो,
बळ नै बाप आप रो जाणो,
बळ – बुध मिल्याँ नखत - परमाणो!

कढी एकसौ आठ उफाणाँ,
रँधै खीचड़ो खदबद छाणाँ,
गळगच रोट मोवणा खाणा,
दूध – दही नी कदे उकाणा!

पै'ली पीता मदवा – मारू,
अब गरीब नै पीवै दारू,
खेत कसायाँ, जँवरी नारू,
कळजुग तणा कूँजडा कारू!

नळ रो नीर, गैस रा चूला,
चीलगाडियाँ रा झल – झूला,
कळ – पुरजाँ रा पायक लूला,
मिनख – मानवी डूँली – डूँला!

• शेखावत सुमेरसिंह

हेल्याँ लिछमी फलका पोवै,
झूंपाँ सुरसत निरजळ सोवै,
न्याव निमड़ग्यो, माया मोवै,
नुगरा हाँसे, सुगरा रोवै!

स्वागत – स्वागत, वंदण – वंदण,
नाजुगताँ रा नित अभिनन्दण,
म्हैल – माळियाँ केसर – चंदण,
छान – झूंपड़ाँ क्रन्दण – क्रन्दण!

बिजळी – पाणी कपड़ा – रासन,
राजकचेड़्यां वेचै सासन,
भासण – चाटण अर उद्‌घाटण,
लोकतन्त्र रा फोकट फाँसण!

लोक – लकीराँ फगत फकीराँ,
मरजादा रै ईराँ – तीराँ,
मनमानी री वाढ़ अधीराँ,
च्यारूंमेर चालगी चीराँ!

तस्कर – चोर करै तपतीसाँ,
साहूकार जेळ में वीसाँ,
अफसर आज निपोरै गीसाँ,
नौकरसाही नाचै गीगाँ!

• शेखावत सुमेरसिंह

नव निर्माण जिकै नै कै'वै,
वण निर्वाण राख ज्यूं बै'वै,
बांध टूटग्या, पुळिया ढै'वै,
सडक सपाट, छांट नी सै'वै!

घूमै धरा, घैण सो गै'वै।
भ्रष्टाचार तणा नद वै'वै,
मत रा मँगता अगवा रै'वै,
उण नै 'जण – गण' ठगवा कै'वै!

अरि – दळ घेरै कानी – कानी
बमां बाजरी बिकै बिरानी,
उडै कपोत साति रा दानी,
अमन – चैन री सांस भुलानी!

तोतां री रट ठकुर – सुहाती,
चमचां री चट काना – बाती,
सांच लुटै अर कूटै छाती,
भारत–भोम जगत री थाती!

बुध रा बाण, तरक री तेगां,
मरै मानखो निलजै नेगां,
अडक अनाज ओपरी देगां
रँध – रँध बँटै ठगी रै ठेगां!

 • शेखावत सुमेरसिंह

गुण ओ ग्याना, सुण रै बकट,
पग–पग पर फुकारै फणकट,
पाग कसूमल, केसरिया पट,
मार्यां मोल मुला ले सकट!

मरद - मरदमी म्यां'ऊँ - म्यां'ऊँ,
पुरुसारथ रा नाहर 'फ्याऊ',
सकळपां री नीवां न्याऊ,
कायरता री घीवां स्या'ऊ!

मूरख पढै, पढावै मोथा,
टाट टिटोडी, माथा थोथा,
पढ - पढ खुराफात रा पोथा,
वणग्या ऊत ग्यान रा वोथा!

श्रळियां - गळियां घर - घर थळियां,
फूटै श्राज फूट री फळियां,
एको कठै श्रठै बिन वळियां
जण - जण जठै करै रँगरळियां!

श्राज प्रदेस वण्या रजवाडा,
मारै छापा, दौडै धाडा,
लडै सियासी लोग श्रखाडां,
खावै श्रवै खेत नै वाडां!

• सेखावत सुमेरसिंह

सोनो – सोनो, चाँदी – चाँदी,
सत्ता – नोट – वोट री बाँदी,
जीवैं नाथ्यो, मरग्यो गाँधी,
रोवैं इंकलाब री आँधी!

परमट – परमट सीमट – सीमट,
राजकचेड़्याँ रुळग्यो जीवट,
खड़ी कतारां चौखट – चौखट,
दीप – बिहूणी जुग री दीवट!

'फैसन – फैसन, कलचर – कलचर',
'फिल्म – सिनेमा – टीवी घर – घर,
भूल – बिसरग्या मूरत – मिंदर,
आप आदमी बणग्यो इंदर!

नर – पसु नागो, निलजी नारी,
बाप कुँवारो, मात कुँवारी,
मायत बणग्या स्वेच्छाचारी,
बसै होटलाँ मे घरबारी!

इमरत कळसाँ तळछट – तळछट,
हाथ – हाथ मे विसघट – विसघट,
नीरव – निर्जन पणघट – पणघट,
गाँव – गुवाडाँ झंझट – झंझट!

नित आंदोलन, ग्रनसन – अनसन,
फीटा नारा, फू'ड़ प्रदरसन,
'पिण्ड छुड़ाणो दे ग्रास्वासन',
राजनीति रो जीवण – दर्सन!

कर – प्रस्तावक ग्रर कर – वंचक,
दोनूँ संचक, फरक न रंचक,
ग्ररथ – तंत्र रै लगग्या पंचक,
नक – नक नकड़ा – ढींच्या – ढंचक!

ग्ररथ – सास्त्र रो भौतिक दरसण,
स्वार्थ – सिद्धि रत नैतिक घरसण,
कोमनिस्ट जग री उतकरसण,
मिनख मवेसी, संप्रभु रावण!

ग्रापा – धापी, बैर – ग्रदावट,
बिगस्याँ पैली रुळै बसावट,
कण – कण संकर, मणाँ मिलावट,
खपग्या जँवरी, फळै सिलावट!

ग्रब कुण धारै रेजी – लट्टा,
पॉलिस्टर – गज, खादी – गट्टा,
वेलबाटमाँ बिकै दुपट्टा,
नर – नारी इकसार कुजट्टा!

धरमो जाट हेमली मालण,
देई – देव जुगल जुग - सालण,
नित रो काम सिनेमा ह्यालण,
घूमर भूल'र 'डिसको' घालण!

माखी माछर, भरणावै बुग,
भींतां भंडगी नारा चुग – चुग,
'कळजुग में ल्यावैला सतजुग,
जयगरुदेव सांचला रव – रुग'

घणो मोह - मद, फांसी - फंदा,
रुँधग्या घेटू, घुटग्या बंदा,
भेख ऊजळा, काळा धन्धा,
गन्दा घोर हिये रा अन्धा!

मंच - मचाणां कविता उन्मुख,
सुणो चुटकला, भूलो सुख - दुख,
मुलक – मसखरा मुळकै सनमुख,
ठाला - भूला पुळकै ग्रण – रुख!

ग्रजब अराजक ग्राज नरोनर,
धरम – बदळ, दळ - बदळ बरोबर,
लाठी – भाटा जंग दरोदर,
खून – खरावा रोज तरोतर!

 • शेखावत सुमेरसिंह

सुण टणकायत, गुण टीकायत,
श्रै के करम कर्‌या पंचायत?
धन – धन दूरी, धिक नेड़ायत,
टाबर ठणकै, सुवकै मायत!

कठै खीर अर कठै चूंटियो,
छोट छोड़ अब रुळै बूंटियो,
गाणीमाणी गोट ऊँटियो,
चढ़गी जानां, करो टूंटियो!

काची कूंपळ, कँवळी कळियाँ,
कुचळै जठै ऋूर पगथळियाँ,
वाकी बचै वठै क्यूं बणियाँ,
जीयाजूण निठै बिन धणियाँ!

कठै गया से घोड़ी - घुड़ला,
हाथी - दांत तणा वै चुड़ला,
करला पवन वेग ज्यूं उड़ला,
बळद्‌या नख - नागोरी जुड़ला!

पै'ली हाथी – घोड़ा हूता,
अब स्कूटर अर कार अणूता,
म्हैल – अटारी गिरवर छूता,
अबै पताळाँ तळघर सूता!

लोक लोग रो, जतन जोग रो,
भाग भोग रो, मदन मोगरो,
विस्कुट वाळो, भखो सोगरो,
मुरधर मोटो वैद रोग रो।

अणमेदा धुप घोर अँधारो,
कु भकरण सँ वणग्या यारो।
नाड नाख दी हिम्मत - हारो,
भूल - भालग्या मिनखाचारो।

मिनख – जिनावर नाग – पीवणा,
हरि – हर – विधि रा हाथ जीवणा,
फाडै मत, पट सीख सीवणा,
बीजळ – वरणा खण्ड खीवणा।

मिनख वणो रै, मुरधर ओपै,
काळ – दुकाळ कदे नी कोपै,
तडकै जागो, सोवो सोपै,
जीवट सेत्याँ जस क्यूँ लोपै।

मुरधर तणै हिये रा हेतो,
मातभोम रा नाहर मेतो,
जुग – भाभरकै अब तो चेतो
आघा आवो, पटै पछेतो।

एक बणो अर नेक बणो जी,
अन्तस रो अविवेक हणो जी,
मरजादा री मेख बणो जी,
मिनखपणे री रेख बणो जी!

परकत बरकत पार उतरणी,
उण सूँ छेड़ कदे नीं करणी,
इण भव-सागर री बैतरणी,
सावचेत ह्वै पगल्या धरणी!

अरै नास्तिक पिसतावैलो,
ओ विग्यान तनै खावैलो,
जड़ामूळ सूँ मिट जावैलो,
साँई - सेतो सुख पावैलो!

कुदरत सूँ मत करै कुचरणी,
कोजी करणी कान-कतरणी,
मोडो-मथरी हुयगी धरणी,
जीयाजूण निमड़गी अरणी!

सब सूँ पैलाँ मिनख बणो रै,
देवाँ - दुरलभ मिनखपणो रै,
जीयाजूण कदे न हणो रै,
बन-खण्डाँ सूँ लाभ घणो रै!

आज-काल मत कर नर-वीरा,
रगत - पसेवाँ झर रण - धीरा,
स्रम री साख लाख रा हीरा,
नित निपजा ज्यूँ पुन्न जती रा!

रतन - प्रसवणी धरती - माता,
सरब धातवाँ री आ दाता,
खानाँ खोदो हँसता - गाता,
कम्म - धरम रा नेडा नाता!

खेत - खेत मे कुवा खुदावो,
वाँ पर बिजळी फेर लगावो,
गाँव - गाँव मे न्हैराँ ल्यावो
करो सिंचाई, अन उपजाओ!

बस्ती - वस्ती, ढाणी - ढाणी,
पचायत री नींव लगाणी,
घर रो न्याव वणै क्यूँ हाणी?
दूध दूध अर पाणी पाणी!

कण कण जोड्याँ मण ह्वै जावै,
बूँद - बूँद समदर लहरावै,
पल री पीढ्याँ घडी गिणावै,
नित नेमाँ मे वडी कहावै!

अस्ट सिद्धियाँ, निधियाँ नौ - नौ,
पाँडू पाँच'र कौरू सौ - सौ,
गुणल्यो सबक जादवाँ-रो – ओ,
'आपाँ दोय'र आपणा – दो-दो!'

आवादी पर रोक लगावो,
रुलतै सारू वंस वधावो,
जावै कम अर उपज बढ़ावो,
घणो कळीतर मत फैलावो!

जात - पाँत रा भेद भुलावो,
मिनख मात्र नै गळै लगावो,
मातभोम पर , वळि-वळि जावो,
देस-धरम रा मंगळ गावो!

गळी-गळी में सड़क वणावो,
वास - वास पोसाळ खुलावो,
वेकारी नै प'री भगावो,
वेगारी रो पिण्ड छुड़ावो!

धीणो - धापो जठै , अड़ा'वो,
गोचर - भोम कदे मत वा'वो,
दूध - दही री नद्याँ वहावो,
इण धरती पर सुरग वसावो!

नागौरी बळद्यो धप धोळो,
साँचोरी गार्यां घी बो'ळो,
खेचळ री फळ पाकै होळो,
रेवड पाळो, राखो टोळो!

सुण मुरधर रा माणस भोळा,
अळी - गळी मे हाथी धोळा,
खावै मणां, बतावै तोळा,
लगडपेच लगावै बो'ळा!

मैणत रा वै आदू वैरी,
पीणा साँप जनम रा ज्हैरी,
वाँ री दुनिया ओढी-पै'री,
बाकी बस्ती गूँगी - वै'री!

वाँ री बाट कदे मत जाई,
ज्यां रा ठाठ धरोड पराई,
जुग - जुग चूस्या, हुई - ठगाई,
खून - पसीनो, करम - कमाई!

आ अदाता, साँचा साँई,
लोकतन्त्र ओ थारै ताँई,
चौपाळा पर राज चलाई,
कोट - कचेड्यां कमतर काँई!

• शेखावत सुमेरसिंह

कमतरियाँ रै चालै चाकी,
ठाला – भूला मारै माखी,
काम कर्‌याँ कद काया थाकी?
माल मुफत रा खावै डाकी!

जै किसाण, तूँ पिरजा पाळै,
जै जवान, तूँ सीव रुखाळै.
'जै जनता – री' विपद्‌या टाळै,
'जै सुराज री' गूँज हिंवाळै!

कुळ रा कौल, वंस रा वादा,
माथाँ मोल मिलै मरजादा,
नितका मरै दुनी रा दादा,
जुग – जुग जीवै नेक इरादा!

कायर करै झूठला हाका,
सायर – सूर समर मे साका,
जोगाराम तणा मग बाँका,
ज्याँ, रा कदे न आवै चाँका!

मिनख–जिनावर मत बण बीरा,
सुख - दुख तो जग मे सै सीरा,
करम – वाकड़ी, भाग – मतीरा,
बाँटणिये रैं निपजै हीरा!

करमठोक री आस अधूरी,
कमतरियाँ री साँझ सिंदूरी,
चाल्याँ घटै मजल री दूरी,
छोड़ हजूरी करो मजूरी!

वाणी तणा वरद सुत कवियाँ,
अन्तसचेता, रिड़मल रवियाँ,
अलख – औलियाँ, नागर – नवियाँ,
जुग झाँझरकै छिड़को छवियाँ!

मगळ मुरधर, जंगळ – जूणाँ,
मा मरुवाणी कूणाँ – कूणाँ,
ज्यूँ इमरत रस छळकै मूणाँ,
जै – जै सुजस साँचलै सूणाँ!

परकत – बरकत, रजा राम री,
हिम्मत कीमत कजा काम री,
कीरत – किरणाँ धजा धाम री,
वन्दा, बंसी वजा नाम री!

मुरधर वीर प्रदेस आपणो,
भारतवर्ष स्वदेस आपणो,
जळ – थळ – नभ परवेस आपणो,
'मिनखपणो' सदेस आपणो!

अवधू जोगी जग सूँ न्यारा,
इमरतनाथ सिद्ध गुणगारा,
वाँरा अठै घणा गुरुद्वारा,
नाँव उजागर प्रेम - पुजारा।

ओस : मिसरी मीठी मा मरुवाणी !

म्हारा नानी सा
बीनासर रा ठुकराणी
खँगारोतजी री
हेतूली हुँसेर नैं
ज्यां री गोदी मे
पळ-पोख 'र
मैं वडो हुयो
अर
मिसरी मीठी मा मरुवाणी रो
इमरत रस
जनम-घूँटी री जियाँ पियो !

—शेखावत सुमेर सिंह

—कह रे चकवा बात !

'कह रे चकवा बात,
'क सुपनाँ रात कटै';
'सुण ऐ चकवी नार,
तनै नर किथाँ नटै';
खुद बीती जे कहूँ,
हिये रो भार हटै',
'पर बीती कहियाँ,
के थारी जात घटै ?'
'नुँवी - पुराणी मे,
कुण सी सूँ घणी पटै ?'
'दोन्याँ सूँ इकसार,
मोकळो ग्यान लटै !'
'वता - वता सुरग्यानण,
मुरधर आज कठै ?'
'लोग जिकै नैं,
रांगरँगीलो कैवै राजस्थान बठै!'
'घर कूँचाँ घर-
मजलाँ री मरजाद अठै,
जोयाजूण निमडती,
लागै, ब्याज - वटै !'
'वेगा कहो राम रा पूराँ,
पुन्न फळै अर पाप कटै !'
'निरख - परख ओ,
नुँवो - पुराणो रूप सटै !'

• शेखावत सुमेरसिंह

—सोनल

एक समै री बात बताऊँ,
जूनै जुग री कथा सुणाऊँ,
लोक-कंठ रा सुर सरसाऊँ,
बाळ-सुलभ रसपान कराऊँ!

पाटणपुर लूँठी रजधानी,
सासण करै भूप सुरग्यानी,
अमन-चैन री वसी बाजै,
नेम-धरम री धाई गाजै!

उण नृप रै सुन्दर पटराणी,
जिण री कूख सिळावण ताणी,
जुड़वाँ भाई-बै'न अनोखा,
जाम्या एक सारसा चोखा!

कँवर हठीलो, सोनल बाई,
खेलण लाग्या 'रतन-तळाई',
दिन दूणा अर रात सवाया,
बधै घणा ज्यूँ मन री माया!

सोनल सुगणी सुबरण-केसी,
मात-पिता रै सुत सूँ वेसी,
लांबी-लांबी कुन्तळ – रासी,
कचन-किरण प्रभात विभासी!

कचन - केस निरख कर माई,
सुगणी सोनल नै समझाई–
'गाँव - गुवाड कदे मत जाई,
वेटी, वाळ मती निरखाई।'

सात सहेल्याँ - सोनल बाई,
फूल बावडी न्हावण धाई,
न्हाय - धोय निज केस सँवार्‌या,
वेस रेसमी वधका धार्‌या।

काँगसियो पेडी पर छूट्‌यो,
राजकँवर रै पग सूँ टूट्‌यो,
सुवरण केस विखरता देख्या,
मन रै लोभ निखरता देख्या।

कँवर ठग्यो सो सोचण लाग्यो,
कच काँगसिये निरख रिझाग्यो,
हठ कर सोयो राज - हठीलो,
घुडसाळा मे वासो लीनो।

पूछण माग्या लोग - लुगाई,
सेवक भेज अरज करवाई,
'कचनकेसी नै ढुंढवावो,
अब री स्यात मनै परणावो।'

सुण चकराया राजा - राणी
नैणां में भर ग्रायो पाणी,
कीकर बात वणै ग्रणहोणी,
वीरै सँग बै'नड़ नी सोणी!

समझा - बुझा थक्या सै ग्यानी,
कँवर कुपातर एक न मानी,
घर - घर व्यापी लोक - हँसाई,
'पूत पिता रो बण्यो जँवाई!'

ग्राला - गीला वाँस कटाया,
सुरग्यानी पिंडत बुलवाया,
वैठण लाग्या वान - बनोरी,
फेराँ रात वणी वरजोरी!

मावड़ हेत हिलोराँ भीजै,
'चावळ सीझै, मूँग पसीजै,
फेराँ - रात टळै ग्रे बाई,
एकर – पूठी – पाछी ग्राई!'

सोनल वोली - 'मावड़ मेरी,
बेगी मार, करै मत देरी,
वावल नै सुसरो किम कैस्यूँ,
धरै बीनणी बण किम रैस्यूँ?

'बावल, जनम - मरण रो वैरी,
वणग्यो नाग काळियो ज्हैरी,
क्यूं नी घीय कुवै में गेरी?
मिनख - जिनावर, थू रै तेरी!'

'धिक रै वीर, धरम रा साखी,
सुबरण - साख राख कर नाखी,
राखी री आछी पत राखी,
लानत तनै, निगळग्यो माखी!

सोनल छोड़ रावळो धाई,
चंदण चढण आंगणै आई,
बोली—'विरछ, धरम रा भाई,
गढ़—गिगनारां मनै पुगाई!'

बारी - बारी सब समझाई,
सोनल ऊँची चढ़ी सवाई,
छेवट एक भतीजी आई,
लाड भुवा नै तळै बुलाई!

सोनल बोली—'नम रै बीरा,
पर-जायां रा सुख - दुख सीरा!
चंदण झुकियो रेसम डोरी,
बांयू बांध उठाली छोरी!

'सत री सिरजी सोनल स्याणी,
पूठी पिरथी पर नीं आणी,
कँवर कुजीव उडीक भलाणी,'
बोल्यो चंदण बध नभ ताणी!'

माया मो'वै, लोभ लुभावै,
मतहीणो आंधो ह्वै जावै,
मनमानी मजलां भटकावै,
सत री सोनल हाथ न आवै!

• शेखावत सुमेरसिंह
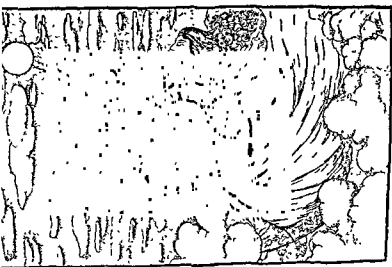
आपां दर ठैर्‌या भाड़ेती,
सोज्या तूं, सुन्दर–लाडेती !'
यूं बोल जिनावर चुप होग्यो,
ज्यूं घोर अंधारो घुप होग्यो !
सरणावण लाग्यो सरणाटो–
'भारत रा कोड़ भरम-भाटो,
भाड़ेती वण्यां घणो घाटो,
मालक बण जीवो, जुग लाटो !
करमां रो काट परो काटो,
सुपनां सूं सांच भली, साटो !
ग्रो देस परायो दर कोनी,
ठालो – भूलो जण–नर कोनी !
कीड़ी रो भोजन मण कोनी,
हाथी रो दाणो कण कोनी !
मैणत कर ल्यावो धाड़ेत्यां,
मालक बण स्या'वो भाड़ेत्यां !'

—जिंदगानी

सुपनै ज्यूं ऊंघै जिंदगानी,
सपणी ज्यूं सूंघै जिंदगानी,
ठाला – भूलां नै पीवणिये–
नागां ज्यूं चूंघै जिंदगानी!

सांचकली लागै जिंदगानी,
सूरज सी जागै जिंदगानी,
करमां रै खेतां फूल - फळी–
करसां ज्यूं भागै जिंदगानी!

मिसरी सी मीठी जिंदगानी,
आ कदे न सीठी जिंदगानी,
कवि री निजरां रै आंगणिये–
कविता सी दीठी जिंदगानी!

अणभोग्यो भोजन जिंदगानी,
सुगरै री सोगन जिंदगानी,
रू – रू मे रडकै प्रीत - सळी,
आसूदो जोबन जिंदगानी!

सुख – सुपनो सोपै जिंदगानी,
हिरणां ज्यूं लोपै जिंदगानी,
तप तणै तावडै घप-घप कर–
किरणां ज्यूं कोपै जिंदगानी!

सोनल सिणगारी जिंदगानी,
आ अकनकँवारी जिंदगानी,
सत रै चंदण चढ़ गिगनारां–
अणदेखी तारी जिंदगानी!

म्रिग - तिस ज्यूं मो'वै जिंदगानी,
समदर सी सो'वै जिंदगानी,
जळ विन मुरधर रै जीवण ज्यूं–
अणसरसी रोवै जिंदगानी!

सुख - स्वाद साँतरा जिंदगानी,
अणनप्या आँतरा जिंदगानी,
आ लख चौरासी जूणां री,
हृद - हीण जातरा जिंदगानी!

परभात्यो तारो जिंदगानी,
घुप घोर अँधारो जिंदगानी,
कवि री परिभाषा पूछो तो–
ओ मिनख – जमारो जिंदगानी!

• शेखावत सुमेरसिंह

—पाषाण सुन्दरी

सर्वांग सुन्दरी निर्वसना,
तूं कितणी वणी - ठणी है ?
कुण गोतम तनै सराप दियो,
कद सूं पाषाण वणी है ?

की आगत रो पथ रोक अठै
जुग - जुग सूं मुखर खड़ी है ?
की रामचन्द्र रै पूत पगां री
रज मिस अठै अडी है ?

पावन निर्दोष अहिल्या सो
ओ रूप कठै सूं पायो ?
इण मिंदर मे खजुराहो रै
कुण-कणां तनै ले आयो ?

निर्वसना निपट दिगम्बर तूं,
अस्लील नही पण किंचित ।
तितली सी चपळ-रंगीली, पण
सालीन सीळ - अभिसिंचित ।

अै भुवण - मोवणी मुद्रावां,
तापस - वाळा सी सज्जा,
अभिव्यजित करै सुनारी रै–
उर री स्वाभाविक लज्जा ।

उमगाया लोग दिसावर सूं
दरसण नै दौड़्या आवै,
पण काम - पिसाच प्रतीकां रा
सद्‌भाव समझ कद पावै ।

मैं भी तो तनैं विलोकी है,
मिसरी सी डळी लखावै,
कौमार्य - बोध री कविता सी
हिवड़ै मे फळी लखावै !

उर री आंख्यां रो अन्धकार
कर दूर तनैं अवलोकी ।
संस्कृति सूं स्रद्धा नै संवार
भरपूर तनैं अवलोकी !

की सिल्पी रैं अन्तर्मन री—
आस्था में, बता, ढळी है ?
जो वेल न उगी इळा - तळ पर,
तूं उण री वरद कळी है ।

तूं मनैं उर्वसी जाण पड़ै,
जो इन्द्रलोक सूं आई ।
छळ - ठग अभिजात पुरुरवा नै
पाछी जाती पथराई !

इमरत रो मिलणो ओखो है,
मधु - सर्च घणो नहीं है ।
सौन्दर्य कळा रैं मानस रो
मोती है, चणो नहीं है !

—मैं कवि हूँ

मैं कवि हूँ,
वरद सपूत सांचलो
सुरसत रो,
नट कोनी !
तूं कान खोल सुण ले,
गूंगा जुग मौनी !

म्हारी कविता मे
वाल्मीक रो सत है,
म्हारी निजराँ में -
काळिदास उन्नत है,
म्हारी कथणी सौ टकां
सास्त्रसम्मत है,
म्हारै चरणां में
गरव - गरूरा नत है !

म्हारी मजलां रो
जुगां पुराणो पथ है,
नवनवो जातरी चढै
जिको गति – रथ है,
फुटरापो म्हारै कनै
मोकळो अणभोग्यो,

• सुमेरसिंह शेखावत

पण सती – साधवी रै
प्राणां रो पण होग्यो !

गणिका मैं कोनी
विकूं, बजारां जाऊं,
लिछमी रै बदळै
वाणी कियां लुटाऊं ?
मंचां पर उघड़ै जिको
पाप – पट कोनी !

—बिना ग्रटेर्‌यां उळझै

विना ग्रटेर्‌यां उळझै
काची कूकड़ी !
काँकड़ नै भीळावै
खेड़ा – टूकड़ी !!
माथै बंधग्या जूत – खूँसड़ा,
खुरड़ां रुळगी पागड़ी !
खूँट्यां आज जनेऊ टँगगी,
हाथां तुड़गी तागड़ी !
चिड़ियाघर में ना'रां नै,
डरपावै वोदी लूँकड़ी !
सामन्ती रा साँग बदळग्या,
सोपण बणग्यो सागड़ी !
कमतरियां रै करमां नै
चर जावै ठाली रागड़ी ।
बाजरिये रै खेतां में
लहरावै संकर रूँखड़ी !
पंचायत री चौपाळां में
सत्ता नाचै नागड़ी !
मिनखपणै रै मोल मिलै तो
बाळ ग्रमीरी ग्रागड़ी !
भरे बजारां लाज लुटावै
बाळनजोगी भूखड़ी !
लोकराज रै कोठै पर
कुरळावै फूड़ पतूखड़ी !

• शेखावत सुमेरसिंह

• उण्यासी

—छणिका

मिनख, ओ मिनख - जिनावर,
फगत पीवणो नाग!
जागणिये नै कँवै - 'सोज्या
सोवणियै नै – 'जाग!'

हेत, ओ हेत, तिसायें–
मन – मिरगै रो नीर!
दूर – दूर सरवर सो सरसै,
कदे न आवै तीर!

किरण, अे किरण रूप री,
ज्यूँ 'बुढिया रा बाळ'!
देखण मे इमरत री धारा,
जे म्हावै तो लाळ!

नीद, आ नीद 'क जावक
जिंदगानी रो पोत!
पलक उघाड़्याँ जनम सरीखी,
आँख मिचै तो मोत!

साँस, आ साँस, देह रै
तम्बूरै री तान!
अणहद नाद सुणै वो मिरगो
जिण रै जीभ न कान!

निजर, आ निजर आँख रै
इन्द्र - धणख री डोर!
बाण चलै जद अलख - काम रा
आप मरै चित - चोर!

पीड, आ पीड 'क जावक
नी'बोळी री जात,
काची खारी जहर,
पकै तो माखन - मिसरी मात!

जद सुरसत भूखी सोवै

ग्राभै रो हियो ग्रमूजै,
धर मिनखपणै री धूजै,
जद लिछमी फलका पोवै,
ग्रर सुरसत भूखी सोवै !

बरसो बादळियां सुगरी,
तिस मरै सीप जुग-जुग री !
समदर रो जळ पीवै तो
मोत्यां री मावड़ नुगरी !

वै बुगला नीर विटाळै,
हँसलो तिर थक्यो बिचाळै,
समदरिये मच्छ-गळागळ
कुण मोती सोध निकाळै ?

श्रणगाया गीत

श्रणगाया गीत घणेरा है,
श्रणचाया मीत घणेरा है,
नर–नाहर बिरळो मिलै जठै
कायर–भयभीत घणेरा है !

बागी श्रणगिणती जणा श्रठै,
श्रर नमक–हरामी घणा श्रठै,
पण वगत पड्यां सिर सूंपणिया
कितणा जण जामण-तणा श्रठै ?

श्ररि रो श्राघात खळै कोनी,
श्रर सांचो मीत छळै कोनी,
पण बांबांबाळो सांप डस्यां
कुण कैवे–हियो बळै कोनी ?

पछतायां पुन्न फळै कोनी,
हर थावर गांव बळै कोनी,
साहस रो सूरज उग्यां पछै—
तारां री दाळ गळै कोनी !

बळि जाऊं यार जवानी पर,
सरवस द्यूं वार जवानी पर,
पण श्ररि नैं सीस झुकावै तो
लानत सौ बार जवानी पर !

वा पिरथी तो पदमणियां री

जिण धरती पर दग-दग करतो
गाढो रगत वह्यो बेथाग;
जिण धरती रा जायां श्रागै
भुकता बैरी, नमतो भाग;
जिण धरती रा मिनख-मानवी
सिर सूंप्या, पण राखो श्राण;
वा धरती तो नर-सिघां री,
जिया जिका भुजबळ रै पाण !
हीरक-हार लजाया धारण—
कर धण नर-मुण्डां री माळ,
जद गजगामण वणी भवानी,
रणखेतां रै मभ्क बिकराळ,
ज्या सतियां रै पत-पाणी नै,
परख थकी खांडां री धार,
वा पिरथी तो पदमणियाँरी,
जौहर जठै हुया श्रणपार !
सीस समो डीघो श्राडावळ,
पाग समी ऊँची मरजाद;
धोरां री धरती पर सरसै,
सूरापण रो समद श्रगाध,
कण-कण जिण रो हळदीघाटी
पग-पग-जठै हुया घमसाण;
मातभोम वा सापुरसा री—
नर-नाहर-रतनां री खाण !

सूरा,
देस रा सिरमौर !

सूरा,
देस रा सिरमौर !
मायड़ भोम हूंदै
काळजै री कोर,
खेतरपाळ
सीवां रा,
चरण
पाताळ-नीवां रा,
कदे
की सोचजे मत श्रौर !
निजरां
राखजै सामी
सदा उण छोर,
श्रावै फोज वैर्‌यां री
जठी सूं
जंग जूझण नै
भठी नै
श्रापणै कानी
उठै ज्यूं
खितिज पर
आकास में
मभ भादवै रा लोर !

सूरा,
देस रा सिरमौर !
मायड भोम हृदै
काळजै री कोर !
सूरा,
जणपदाँ री ढाल,
नाहर,
मात–भू री
माँद रा बब्बर,
सपूती सिंघणी रा लाल !
दुरळभ
मोतियाँ री माळ सूँ
मुँहगो 'ज थारो भाळ,
जी रो वाळ भी वाँको
कदे नी कर सकैलो काळ !
थारी
पीठ रै पाछै
करोडाँ लोग हाँ
ज्यानै 'ज थारा
घाव अखरैला
रगत रा
स्राव अखरैला
'क करणो
तोल तो वाँ रो
चुकाणो

• शेखावत सुमेरसिंह

मोल तो ज्यां रो
घणो ओखो,
नहीं चोखो,
भरोसो राखजे पण,
पीढियां
आभार मानैली,
'क थारै
परिजणां नै पोखणो
उपकार जाणैली,
कदे मत उणमणो होजे,
सदा तूं जागतो सोजे,
सँजोरा वार
सूंवै काळजै
लीजे भलाणी झाल !
सूरा,
जणपदां री ढाल,
नाहर,
मात–भू री
मांद रा बब्बर,
सपूती सिंघणी रा लाल !

सूरा,
वांकड़ा रण रा,
ठगाणा
ठाकुरा प्रण रा,
जुझारा,

मोल इण बळिदान रो
वा श्रमरता इतिहास री,
जस–ख्यात री,
कोनी मिलै
जो लोक में
कायर–कुबेरां नै
करोड़ां भाव,
छळ रै दाव,
मन रै चाव,
श्रर
परलोक मे
श्रगवाणियाँ
वां श्रप्सरावां री
जिक्यां नै
लोक री सतियाँ
चिता में
कूद कर बरजै
उणां री सौत ज्यूं
श्रधबीच मे ततकाल ।
जौहर
पदमण्यां री पत
'क साका
सूरवे जण रा !
सिपाही,
बाँकडा रण रा,

ठगाणा
ठाकुरा प्रण रा !

जुझारा,
भोर रा सूरज,
सुखाँ री साख,
धरती,
धरम
अर धन-धाम री
पत राख !

पापी
पग जठै मेलै,
वठै री भोम नै
निज रगत रै तातै
पनाळाँ सींच
पालळिया,
मरण रै पंथ पर
कर कूच
आघै काँकड़ाँ
जुग-जोत भुजवळिया,
चुकावण मोल
मुँहगै भाव
मायड-भोम हंदै
करज रो !

निज फरज रो

नर—सिंध,
अरि-दळिया !
जुझारा,
भोर रा सूरज,
सुखाँ री साख,
धरती, धरम अर धन–धाम री
पत राख !

सूरा,
मुलक री मरजाद,
सुगरा सुभट
अणखीला,
अरे ओ अरियाँ रा अपवाद !
सिवाळै
समर जीत
घर आव,
हिंवाळै समै
सुडीघै सीस
विजै रो
कीरत–मुगट धराव,
उडीकै
आरतडै मिस
बैनड सोनचिडकली
वीरा,
केसर–तिलक कराव,

वधावाँ
राखी हाथ बँधाव,
हुँसेराँ हिचकै
मा रो हेत,
लाल लाखीणा
कुळ-लाडेसर,
कूख सिळाव,
कामणी जोवै
ऊभी वाट
सायना
एकर पूठो ग्राव,
सुन्दर
कीधो ग्राज वणाव,
अबै तो
मिजमानी मिस
हुळसै
जण-गण ग्राखो
मुळकै
ग्रपणायत री याद !

सूरा,
मुलक री मरजाद,
सुगरा सुमट
ग्रणखीला,
मरै ग्रो ग्ररियाँ रा ग्रपवाद !

श्रे सुगणी सुरसत, बता मनै !

श्रो मिनख-मानवी भारत रा,
दीवाळी कदे मनाई के ?
जुग-जुग रा दाळद धोवण नै
लिछमी भी थाँ घर श्राई के ?

घी घाल्यो नहीं घिलोडी मे,
कद देख्यो तेल तिलोडी मे ?
दीवा-बाती मिस चूल्है मे
चिणगारी भी सिलगाई के ?
दीवाळी कदे मनाई के ?

कुण पूछै बात मिठाणाँ री ?
जग जाणै जात किसाणाँ री !
श्रे सुगणी सुरसत, बता मनै
भर पेट राबडी खाई के ?
दीवाळी कदे मनाई के ?

कुण निरख्या म्हैल माळियाँ नै ?
जण तरसै श्रठै ढाळियाँ नै !
श्रो नरक-जमारो जीवणियाँ,
टपरी भी कठै छवाई के ?
दीवाळी कदे मनाई के ?

□□

• शेखावत सुमेरसिंह

जस री जोतां जागै !

जुगै जठै दिवला जीवट रा
जस री जोतां जागै !

माथां-मोल बिकै मरजादा
मानी मिनख मुलावै !
विरद बखाणै बो बड़भागी
वागी मौत बुलावै !
अपणां साथै सूर अपूठो
अरियां सामो आगै !

मरण-तिंवार तिंवारी मांग्यां
सुगरा सीस समरपै !
तरपण-समै पूत तरवारां
तातो लोही तरपै !
बगत पड्यां जूझै भुजबळिया
समरथ सुहड़ां सागै !

केसरिया पट, पाग कसूमल
असि कर, अस असवारी !
भाळ तिलक, मूंछ्यां बांकड़ली
चितवण ज्यूं चिणगारी !
कमळा वरै इसो नर-नाहर
वीरां वस्तर वागै !

दौलत देव, दिवाळी धोकै
ब्याजाँ भरै वखारी !
साहूकार किसा जद सेठाँ
साख न साहूकारी !
लिछमी जण-जण तणी लाडली,
लाज बोलियाँ लागै !

सत री साख सिया सतवंती
रुतबो राम रुखाळै !
नराँ-नखत-परमाण-नखतरी
श्रग-जग श्रोप उजाळै !
दीपै जठै धरम रो धूजो
भरम-श्रँधारो भागै !

देह-दीप, जौहर-दीवटियो
सत री श्रमर सिखावाँ !
गौरव-गरिमा री गोधूळी
दीपै दसूँ दिसावाँ !
रजवट रीत रमणियाँ रीझै,
पद्मणियाँ पत-पागै !

• शेखावत सुमेरसिंह

राजहंसां रो देसूटो !

म्हे मातभोम रो समर-सदेसो ल्याया हां
जे रणमेतां रै मारग कोई चालै तो !
आयो मरण-तिंवार, बधाई जजमानां नै
जे मायां तणी तिंवारी कोई घालै तो !
जस-कीरत री स्यातां हृदा बहीभाट हां,
म्हे विरदां री पोथी बांचण नै आया हां !
वाणी रा वरद सपूतां अर हलकारां नै
उण वाणी रा वाहण जांचण नै आया हां !
'वै देई-देव हिंवाळै रा से कठै गया ?'
ओ अणचीत्यो समचार चराचर पूछैनो !
वो 'मेघदूत' रो 'यक्ष' कठै जे भेंट्यो तो
वा अळका कीकर लुटी, सरासर पूछैलो !
म्हे नळ राजा रो बोखो ग्रांख्यां देखणिया,
उण दमयंती रो दुख लाटण नै आया हां !
अब मानसरोवर रै मोत्यां नै तरसणिया,
म्हे आंसूडा रो रिण बांटण नै आया हां !

ल्यो 'सत्य अहिंसा' रै पाणी नै परखणिया
वै सींवां री मरजाद उलांघै परदेसी !
पण बुधहीणा रंगरूटां नै ओ पतो नहीं
औ धणी रगत सूं सातूं समदर भर देसी !
म्हे 'राम कृष्ण' री पगथळियां रा परम पवित्तर
पगल्यां री माटी चाटण नै आया हां !
पाबासर रै पावटिये रा राजहंस हां,
म्हे देसूंटै रा दिन काटण नै आया हां !

• शेखावत सुमेरसिंह

वैर्‌यां रा कटक उछेरणिया ग्रर जूझ मरणिया
नाम-धणी नर-नाहर मिलणा ग्रोखा है !
हाका कर-कर गाल बजावणिया लोगां सूं
वै मरण-पंथ पर कूच करणिया चोखा है !
मोत-कुमोत जठै घुळ-मिलिया भीड़-भाड में
म्हे ग्राज खरा-खोटा छांटण नैं आया हां !
म्हे राजहंस-कळहंस कहीजां, नीर-छीर रो
न्याव करण मिस देसाटण नैं ग्राया हां !

आखं भारत री खमा घणी !

:
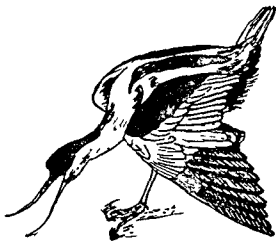
सुगरा खेतरपाळ नीव रा
अमर सहीद, सुभट रण-गारा !
ख्यातां रै खितिजां पर उगता
जस-कीरत रा जग-मग तारा !
जिका नरां सिर सूंप बचाई
मातभोम री मुगट-मणी !
वां सीव-रखाळा सिघां नै
आखं भारत री खमा घणी !

आण-वाण पर जूझ मरणिया
मरण-पंथ पर कूच करणिया !
रण-खेतां में फाग रमणिया
महाकाळ नैं आप वरणिया
सस्तर धारैं, सरवस वारैं
जलम-भोम पर, जिका धणी !
वां सायर-सूर सपूतां नै
आखै भारत री खमा घणी !

ज्यां रो दूध्यो वंस-उजागर
ज्यां री कूख रतन री खाणां !
ज्यां सतियां रै पत-पाणी नै
परख थकी अरि री किरपाणां !
नर-नाहर-प्राणां रा बागी
मान-धणी सन्तान जणी !
वां वीर-प्रसवणी मांवां नैं
आखं भारत री खमा धणी !

• शेखावत सुमेरसिंह

आजादी री कदर करणिया
अपणी धरती आप रुखाळै !
जिण रो निपज्यो अंजळ भोगे
उण माटी री ओप उजाळै !
सेकण नै अरि-सीस-बाटियां
बणै जठै भड़ सैळ-अणी !
उण पदमणियां री पिरथी नै
आखै भारत री खमा घणी !

—ओ भारत रा खेतरपाळो !
होस सँभाळो-सींव रुखाळो ! !

राजघाट रा सूत - कतारो
सत्य - अहिंसा रा हलकारो !
सस्तर सोघो - बख्तर धारो
'हर - हर महादेव 'उच्चारो !
मोल चुकावण नै सुराज रो
माथा मांगै आज हिंवाळो !

जाचक री झोळी नै फँको,
सेल अण्यां सूं याटी सेको !
खरी मजूरी रा पग टेको
छोड हजूरी रो ठग - ठेको!
नीतर पीढ्यां भूख मरैली
मस्तक - तिलक लगैलो काळो !

दुरसीसां रा घाव न लागै,
हाका कर्‌यां न बैरी भागै !
वळ - बुध दोनूं ज्या रै सागै
नमै जमानो वां रै आगै !
प्राणां रा बागी बण जूझो
सिर आई विपदा नै टाळो !

• शेखावत सुमेरसिंह

वीर सिवा रा सूर सपूतो,
राजस्थान तणा रजपूतो !
रण - पथ रा जोगी - अवधूतो,
मात भोम रा सिंघ - प्रसूतो!
जठै - जठै पापी पग मेलै
रगत - पनाळाँ इळा पखाळो !

भुज - बळ रै जणमत नै टेरो
गौरव री गीता नै हेरो !
मरजादा रा भाव अटेरो
पुरसारथ रा कटक उछेरो !
कळजुग रै दुसमी रावण री
उतराधी लंका नै बाळो !

ओ इस्लाम धरम रा प्यारो,
'अल्ला हो अकबर'–हुंकारो !
ओ मस्जिद - गिरजा - गुरुद्वारो,
सरबस वारो - वतन उवारो!
जिण रो निपज्यो अंजळ भोगो
उण धरती री नाँव उजाळो !

❦

—उठ रे वीरा तनै जगावै
धरती राजस्थान री !
आयो मरण-तिवार आज
आ बेळा रण-अभियान री !

गोर निछोरा धोरां ऊपर सुवरण वरणी तावडी,
कण-कण जिण रो हळदीघाटी वा पातळ री मावडी,
जस री धजा फरूकै जग मे 'भामासा' रै दान री !

मेवाडी मगरै री माटी नर-नाहर निपजावणी,
आ पिरथी तो पदमणियाँ री पत-पाणी सरसावणी,
इण रा जौहर याद दिरावै सतियाँ रै बळिदान री !

सीस समो ऊँचो आडावळ, मरजादा री पागडी,
धण्यां थकां धरती जावै तो त्याग अहिंसा आगडी,
सूरापण तो अमर निसाणी पुरखां रै अभिमान री !

उतराधो नगराज हिवाळो जोवै वाटां आपणी,
सीवां मे दुसमी री फौजां पांव पसारै पापणी,
मानसरोवर रै हंसां री पढ पांती आह्वान री !

जूझो रण-जूझार, जवानी नीतर विरथा जावणी,
चेतो रै भरतो आपां नै जुग मे जोत जगावणी,
वैर्‌यां सूं घमसाण कटक रो, अगवाणी मिजमान

• शेखावत सुमेरसिंह

—मायड करै पुकार, सपूतो जागो रे !

ग्राज सुण्यो म्हे जग, मरण री वेळा है,
सीवां थानी कूच करण री वेळा है,
रण-खेतां मे फाग रमण री वेळा है,
जोगणियां रा उदर भरण री वेळा है,
हाथां रा हथियार समर रो सागो रे !
मायड मांगै सीस, सूरवां जागो रे !

सामै कांकड ग्राज ग्राघडा चालण नै,
पुरखां री मरजाद पुराणी पालण नै,
नर-मु डां री माळ गळै मे घालण नै,
सूंई छाती वार करारा झालण नै,
पाग कसूमल, केसरिया रण-वागो रे !
मायड जोवै वाट, जवानो जागो रे !

धरती री ग्ररदास ग्रमीर हजूरां नै,
मातभोम री लाज गरीब मजूरां नै,
वगसो माफी सासण तणै कसूरां नै,
डडो पैली दुसमी दैत गरूरां नै,
ठाला-भूला वैठो मती अभागो रे !
सनमुख लुटै हिंवाळो, धणियां जागो रे !

 • शेखावत सुमेरसिंह

नु वो परभात

आज नु वो परभात नु वै विस्वासाँ रो,
सिर पर पगल्या मेल अँधारो भागै ल्यो !
त्याग जुगाँ रो सोपो भरम-निसासाँ रो
जाग्यो अवै हिंवाळो, भारत जागै, ल्यो !

आळस पसवाड़ो फेरै अब सदियाँ रो,
रण-पथ पर भी धूम मची अभियानाँ री,
रगत-सरोवर उफणै जोवन नदियाँ रो,
आयो मरण-तिवार, होड बाळिदानाँ री,
अचरज री आ बात मिली पण देखण नै
राज-करणिया लार, रिआया आगै, ल्यो !

हाका कर-कर गाल बजावणिया घणियाँ,
समर-भोम मे कूच करण रो मतो नही !
भामासाह सरीखा सरबस अरपणियाँ,
पातळिये परताप धणी रो पतो नही !
माथाँ तणी तिवारी दुरळभ हुई जठै,
बिन माँग्या धन-दौलत रा ढिग लागै, ल्यो!

रंग-रंग वाँ सायर-सिघ-सपूताँ नै,
सीव रुखाळै, आण-वाण पर मरै जिका !
घणी खमा वाँ रण-वका रजपूताँ नै,
मातभोम रो नाँव उजागर करै जिका !
दळबन्दी रा स्वारथ घोटै गळा जठै,
न्यारा-न्यारा मजहव सारा सागै, ल्यो !

—संज्या होवण दे ,'

जगमग जोत जगामग जागै,
छिण-छिण दूर श्रँधारो भागै,
थमज्या वैरण बाळ, दिवला जोवण दे !
श्रासी लिछमण-राम, सज्या होवण दे !

मगळ-गीत वधावा गास्यां,
सरजू-तीर तिवार मनास्यां,
फुलडा चुण-चुण ल्याव, गजरा पोवण दे !
श्रासी लिछमण-राम, मनडो मोवण दे !

बरसाँ बाद श्रजोद्या हरखी,
सिया-राम री थाती परखी,
श्रँसुवा ढळ-ढळ जाय, पगल्या धोवण दे !
भासी लिछमण-राम, सुध-बुध खोवण दे !

• शेखावत सुमेरसिंह

—कस्तूरो मिरग

वन-वन सोधै वास मिरगलो,
कद भागै, कद अटकै ?
सौरम-सणी बाळ रै झोकां
मत-भरमायो भटकै ।
भूख भुलावै, तिस विसरावै,
सुध-बुध त्यागै तन री ।
रूं-रूं व्यापै बोध घ्राण रो,
पगल्यां मे गति मन री ।
रुक-रुक हेरै, झुक-झुक सूंघै–
बोजां-बांठां बहकै ।
नाभी बीच फळै कस्तूरी,
आखो रो'ई महकै !
मरै कुमौत गंध रै साटै–
आप हिये रो आंधो ।
भरम अथाह तणै भव-सागर
बांध ग्यान रा बांधो !

—मकड़ी रो जाळो

कातै काचा तार कतारी,
ताणा-वाणा ताणै,
ऊणाँ-कूणाँ, छानै ओलै–
ठाँवाँ-ठौड-ठिकाणै ।
सूँई छाती मन रै साँचै–
बेजो वणै बणारी !

सुरग समी सुख-सेज सँवारै,
ओपै अगम अटारी ।
नख-सिख निरत करै नटणी ज्यूँ,
लुळ-लुळ ऊँघी लटकै,
बीजा आगत फँसै विचारा,
अधर-पधर तन अटकै ।

अपणै हाथाँ मरै अभागा,
हे'रो मिलै न हेर्याँ ।
जग-जीवण मकडी रो जाळो,
उळझै बिना अटेर्याँ !

मा !

वता मा, भुवन-मोवण रूप ओ कुण रो !
पलक-पट खोल निरखण नै
सगुण चितराम निरगुण रो !
उसारै अधर नखतां नै
सबळ आधार-बळ उण रो !
हरख सूं प्राण मे उण री,
वरद पदचाप नै सुण, रो !
जमारो जीव रो भोगै,
करम-फळ पाछलै पुन रो ।
मुखर हर सांस मे चेतण
पपैयो प्रीत री धुन रो ।।

मा, कुण सुपनै मे मनै रिझावण आवै ?
इन्द्र-धणख सी सतरगी किरणां रो जाळ विछावै ।
जाण मनै इकलाण ठगोरो मांझळ रात जगावै ।
काची नीद उडावै ए वो सैनां मे वतळावै ।
सुध आयां निरजण चौफेरै, निजर न कोई आवै ।
इसडो कुण वो अन्तरजामी, हेर्‌यां लुक-छिप जावै ?

—स्यात्

जाग-जाग अणजाण वटाऊ,
पंछी पुळकै, बीती रात !
दूर घणेरो ए'डो तेरो-
मग गोरखधधै री जात ।
सोपै भटक्यां लोग न देखै,
दिन मे अटक्यां चालै बात ।
सोवणियो; जण ससारी मे,
खोवै जिको न पावै स्यात् ।

मान-मान मनमौजी हसा,
क्यू ँ कुरळावै मांझल रात ?
धरती धूजै, गगन अमूजै,
सरवर गू ँजै सूकै गात,
इण जगती मे सुण ओ स्याणा,
स्वारथ रा सारा उतपात !
सुख मे मोती चुगै जिको ही-
दुख मे आंसू पीवै स्यात् !

चाख-चाख रस-लोभी भँवरा,
फूलां रा मुरझाया गात !
रीत प्रीत री तनै चीत नी,
तू ँ कपटी निरमोही जात !
सुख रा सगो घणा जगत में,
दुख मे कोई करै न बात,
रस-पीवणियो मरै तिसायो—
तो कोनी अणहोणी स्यात् !

—ताणा-बाणा

पलकां री सीपां सूं आंसू मोतीड़ा सा ढळकै,
हियै हेत री रतन-तळाई छळ-छळ पोळी छळकै,
रो-रो नैण गमावै विरहण मन रै भावां खोवै,
आंख-मीचणी खेलै रातयूं, सुपनै रै मिस सोवै,
अन्तरजामी जाणै इण रो कदे न आवै एं'ढ़ो !
दूर पीव रो गांव, प्रीत रो मारग टेढ़ो-मेढ़ो !

जगमग दिवलो जूपै, निरमळ जोत जगामग जागै,
धवळ चांदणो निखरै धुप-धुप, अधर अंधारो भागै,
रूप-रंग रै लोभ पतंगो आलिंगण नै झपटै,
बाळै पांख बुझावै बाती, अंग-अंग अगनी लपटै,
बाकी बचै भसम री ढेरी, धूंवो न्यारूं कूणां,
छिण-भंगुर जग-जीव-जमारो, लख चौरासी जूणां !

धूप - छांव रा ताणा-बाणा कद उळझै, कद सुळझै,
तिस मरतै भोळै हिरणां री कंवळी काया मुरझै,
झूठ-मूठ धोरां री धरती समदर सी दरसावै,
फिरै हांफता, खोड़ नापता, आपस में बतळावै–
'वो दीसै रतनागर लहरां लेतो, सामा झांको !
पग-पग जळै मसाण जगत में, जीवण-बाळद हांको ।'

आगै राम रुखाळो !

जग-जीवण अणजाणी रो'ई जिण रो अंत न हेरो !
जाणै जीव कठै सूं आवै ? जावै कठै न बेरो,
जनम-मरण री दो मजलां रो जगती-बीच बसेरो,
सांच-झूठ री धूप-छांव रै भूल-भरम रो घेरो,
च्यार दिना री धवळ चांदणी, पाछै घोर अंधेरो,
पग-पग खाई, डग-डग घाई, ए'डो दूर घणेरो,
रीतै हाथां सभी सिधार्‌या कर-कर सांझ-सवेरो,
जग-जीवण अणजाणी रो'ई जिण रो अंत न हेरो !
मिनख-जमारो भूल-भुलैया, मन रा ढोर उछेरो !

आखी जूणां जीव एक सो, पण न्यारी मरजाद,
कुदरत रो मो'ताज जिनावर, मिनखपणो अपवाद,
प्यारो काम, न चाम जगत् मे, गुण-ओगण मे भेद,
सायर जण रो सूतक जुग-जुग, दुरजण मर्‌यां न खेद
बिरळी जामण जणै नखतरी देवां दुरळभ जोड,
जीवै जितै मानखो राखै, अमर बणै तन छोड,
आप मर्‌यां पाछै जुग-परळै, जस-अपजस री होड !
सिद्ध गयां सूं अठै पुजीजै सिद्ध-रह्यां री ठोड !

आळस लोपालोप अँधारो, कमतर पंथ–उजाळो,
अपणी वणती धरम मिनख रो, आगै राम रुखाळो,
जळ मे तिरै, उडै अम्बर मे जडमाटी री काया,
स्रम रै पाण करम री खेती सुरग तकात लजाया,
विरळो नर जग मे भागीरथ, कुंभकरण हर कोई,
जण रो आदर करै जमानो, जड नै कठै न ढोई,
बेमाता रै लिखे लेख री, जतन-जुगत पत राखी !
फिरै-घिरै सो चरै, निठल्लो मारै माखी !

बोल लाखीणा !

वाणी नै समझै बाँझ जिका जण चूकै,
स्याणा थुयकारै जठै, अनाड़ी थूकै,
कविता बण जीवै जुगां बोल लाखीणा,
कवि रै कठां नै काट काळ खुद कूकै !

सुरसत तणा सपूत, सुलखणा सिख,
कवि, लाखीणा बोल लिखै तो लिख !
बिणज-बजारू-तोल तुलै तो धिक,
गज–मोत्यां रै मोल बिकै तो बिक !

आज तो पडियो काळ-दुकाळ,
अमूजै तिसिया आळ-पताळ,
मौत रा मूळ-ब्याज ल्यो लटै,
रामजी साँस-साँस नै नटै !

आँधियाँ उमटै उतरायूण,
'क निठगी बादळियाँ री जूण,
सूकिया थळिया ताल-तळाव,
बिरानो बणियाँ तणो बणाव,
बीदिया बोझा-बाँठ समूळ,
'क आठूँ पो'र धूळियाधूळ,
जिनावर मऊ-माळवै ढाळ,
'क मारू-भोम बणी बिकराळ,
माछळ्याँ कळपै जळ बिन जठै,
पखेरू लाधै एक न बठै !
चुगो नी मिलै चाँच नै अठै,
जमारो मिनखपणै रो कठै ?

अबै तो बाड खेत नै खाय
'क करसो कठै कमावण जाय ?
ओबरी रीती-पाती पडी,
बाजरी दुरळभ जीव-जडी,
मानखो सुणै भूख री गाळ,
'क विधना भखगी पुरस्या थाळ,

पीठ सूं पेट पाधरा सटै,
टाबरी-'रोटी-रोटी' रटै,
विखै रा दिन अब कियां घटै ?
घड़ी-पुळ जुग री जियां कटै !

उधारो मिलै न दाणो अेक,
सांवरो राख्यां रहसी टेक,
कुण्ड रो पालर नीर न सरै,
'क वाकळ पियां विरायज मरै,
पूगग्यो टको-टको टकसाळ,
'क अंजळ उठग्यो नौ-नौ ताळ,
वाणियो आय बारणै डटै,
उगाही कर्यां विना नीं हटै,
अडाणै मेंडै इळा.मय पटै,
'क बळद्या विकै बीज रै बटै !

अम्होणी आँख फरूकै अे !

अे कुण ऊभा बारणै, अगघाणी मिस आज !
हरख-हुँसेराँ-हिचकियाँ, कोड करां किण काज !!

सहेल्यो, कीकर आज अम्होणी–
आँख फरूकै अे !

गज-डीघा चढ गोखडाँ, गावाँ मंगळ-गीत !
आरतडो कर ओळखाँ, पावणियाँ री प्रीत !!

चुण-चुण कळियाँ चावसूँ, हुळस पिरोवाँ हार !
उभकाँ, अरपाँ, आदराँ, मुळक कराँ मनवार!!

नेह हिये नी नावडै, नैणाँ छळकै नीर !
पग धोवाँ, पाळाँ प्रथा, ओठी खड्या अधीर !!

अपणायत रै आँगणै, खेडा-काँकड-खेत !
मोत्याँ बरसै मे'वलो, हीराँ निपजै हेत !!

सहेल्यो, स्रीकर–स्याम पधार्या–
धाक–धड्कै अे !

म्हे लिख-लिख भेजां ओळमा,
थे बाँच वगावो, जाणिया !
म्हे अणमोलो घण धारणी,
थे विणज करणिया बाणिया !
थे फूल-फूल रा रस-लोभी,
म्हे अणचाखी वेलाग कळी !

मिसरी सी मरवण डागळिये,
जळ-धारां भीज रही सगळी !

• शेखावत सुमेरसिंह

अबळा सिणगारी,
कद-कठँ कटाई
वा वेणी वासग नाग सी,
कजळी वाग सी ?

महिला मरदानी,
बूची–बचकानी,
'फुटपाथाँ' हाँडै गूँगी–बावळी,
गोरी–साँवळी !

गजगामण गजवण,
लजवंती–लजवण,
सुवटै री मैनाँ,
वीराँ री बै'नाँ,
कवियाँ नै लागै अधुना ओपरी,
सोनल, छोकरी !

• शेखावत सुमेरसिंह

बैरण बादळी !

घोरां री धायड़,
काळजिये री कोर,
मे'वै री मायड़,
तरसै मिरगा-मोर,
विन बरसी मत जावै बैरण बादळी !

बिरखा रुत आई,
लाग्यो अबै अपाढ,
कंठां कुमळाई
मुरधरिये री मांढ,
हाल निजर नी आवै बैरण बादळी !

अंबर गरणावै–
हाकै री हुंकार,
दमकै दामणियां–
खांडै हंदी धार,
सावणू मास, बिरावै बैरण बादळी !

मकड़ी रै जाळै
आभो लोरांलोर,
मेघा, मंडरावै
जाणै सूना ढोर,
भादूड़ै भरमावै बैरण बादळी !

मोतीड़ा निपजै
बरसा इंदर, छांट !
तावडियो ताणी
करमां केरी गांठ,
आसोजां अळसावै बैरण बादळी !

• शेखावत सुमेरसिंह